Try the Spirits: A Reformed Look at Pentecostalism

David J Engelsma

Hindi

आत्माओं को परखोंः पेंटिकुस्तवाद पर सुधारवादी दृष्टिकोण

डेविड जे. एनजेलस्मा

प्रस्तावनाः–

धार्मिक आंदोलन जिसे 'पेंटिकुस्तवाद' कहा जाता है उसका परीक्षण सुधारवादी विश्वास के दृष्टिकोण से किया जा रहा है। क्योंकि 'पेंटिकुस्तवाद' सुधारवादी कलीसियाओं में प्रवेश कर रहा है। कुछ मानते है कि सुधारवादी विश्वास और पेंटिकुस्तवाद में तालमेल (सामंजस्य) है, अन्य कुछ लोग इस युग में पेंटिकुस्तवाद को सुधारवाद का पूरक मानते हैं, जबकि कुछ खुलकर कहते हैं कि पेंटिकुस्त का धर्म, ऐतिहासिक सुधारवादी विश्वास का स्थान ले रहा है।

यह परीक्षण करना वैधानिक रूप में उचित है। आमतौर पर पेंटिकॉस्टल विचारधारा उनके आलोचकों को यह कहकर भयाक्रांत करती है कि पेंटिकुस्तवाद की आलोचना करना पवित्र आत्मा के विरुद्ध अक्षम्य पाप 'ईशनिंदा' है। एक सुधारवादी व्यक्ति इस डराने वाली चाल से भयभीत नहीं होता। कलीसिया के इतिहास में एक से अधिक बार झूठे शिक्षकों ने पवित्र आत्मा का नाम लेकर कलीसिया में प्रवेश करने का प्रयास किया है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण 16वीं शताब्दी में प्रोटेस्टैन्ट सुधारों के समय कट्टरपंथियों द्वारा विटेनबर्ग में लूथरवादियों का सताव है, उनमें ''स्वर्ग के भविष्यद्वक्ता'' और ''उमंगी (जोशिले)'' थे जिन्होंने पवित्र आत्मा से विशेष प्रकाशनों और आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ प्राप्त करने के दावे किये। उन्होंने मेलान्कटन को चुप करा दिया परंतु वे लूथर को चुप नहीं करा सके। जब उन्होंने पवित्र आत्मा, पवित्र आत्मा चिल्लाया, लूथर ने उत्तर दिया, ''मैं *तुम्हारी* आत्मा के मुंह पर चांटा मारता हूं।''

सुधारवादी स्त्री–पुरुष मसीह के आत्मा के विषय में पवित्र शास्त्र में दिये गये निर्देश जानते हैं, ''प्रियों, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परंतु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से है या नहीं, क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े है'' (1 यूहन्ना 4:1)।

आत्माओं की परख करने का मानक, जिसमें पेंटिकुस्तवाद की आत्मा भी शामिल है, प्रेरणा से लिखा गया परमेश्वर का वचन अर्थात पवित्र शास्त्र है। पवित्र शास्त्र के प्रकाश में प्रश्न होना चाहिये– क्या यह आत्मा, यह धार्मिक आंदोलन, यीशु मसीह का अंगीकार करता है (1 यूहन्ना 4:2,3) क्या यह मसीह की धर्मशिक्षा में

बना रहता है (2 यूहन्ना 9)? क्योंकि पवित्र आत्मा यीशु मसीह का अंगीकार (साक्षी) देता और मसीह के सिद्धांत को प्रकट करता है।

पेंटिकुस्तवाद का परीक्षण करते समय सुधारवादी विश्वासियों के 'मसीही जीवन' पर उनकी आलोचनाओं को शामिल करने पर विचार भी करना चाहिये। क्योंकि पेंटिकुस्तवादी "मात्र विश्वासीयो" के जीवनों को तुच्छ (कमतर) मानते हैं।

पेंटिकुस्तवाद का प्रभाव है कि विश्वासीजन सोचते है कि क्या उनके जीवन वैसे है, जैसे होने चाहिये– अर्थात एक सामान्य मसीही जीवन। यहां तक कि विश्वासियों को संदेह होने लगता है कि उनका उद्धार हुआ भी है या नहीं। अंतिम विश्लेषण में, पेंटिकुस्तवाद धार्मिक व्यक्तियों से अपील करता है कि वे अधिक उच्चतर, भरपूर, गहिरे और समृद्ध मसीही जीवन का घमंड करे। पेंटिकुस्तवाद ऐसे मसीही जीवन में आनंद करता है, जो संपूर्ण रूप में सामर्थ, संपूर्ण रोमांच, संपूर्ण आनंद, और संपूर्ण जय का जीवन है।

हम यह धारणा न बनायें कि क्योंकि हम पेंटिकुस्तवाद का सुधारवादी दृष्टि से परीक्षण करने की बात कहते हैं, इसलिए इस परीक्षण का विचार केवल उन तक सीमित है जो सुधारवादी कलीसिया के सदस्य हैं। सुधारवादी विश्वास प्रोटेस्टैन्टवाद अर्थात बाइबल सम्मत मसीहत का प्रतिनिधि है। साथ ही यह भी प्रकट होगा कि सुधारवादी विश्वास जिस मानक से परीक्षण करता है, वह मानक पवित्र शास्त्र है और यह मसीहत का अंगीकार करने वाले सभी के विश्वास और जीवन का नियम है। पवित्र शास्त्र के स्पष्ट प्रकाश में पेंटिकुस्तवाद उन लक्षणों का प्रदर्शन करता है जो बिना त्रुटि एक युगों प्राचीन और चिर परिचित स्वरूप को दर्शाता है जो मसीहत के लिये एक खतरा है।

अध्याय–1

पेंटिकुस्तवाद की मूल बाइबिल सम्मत अवधारणों का सुधारवादी उत्तर

पेंटिकुस्तवाद से हम समझते हें कि वह एक धार्मिक आंदोलन है जिसमें परमेश्वर की संतान में अनुग्रह के दूसरे स्पष्ट कार्य की शिक्षा दी जाती है, जिसे "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा" कहा जाता है। नया जन्म (या, हृदय परिवर्तन) के कुछ समय बाद विश्वासी पवित्र आत्मा पाता है, अकसर यह एक अद्‌भुत भावना–प्रवण अनुभव है, कुछ इस प्रकार कि अब पहली बार वह आनंद का अद्‌भुत, क्रियाशील मसीही जीवन और सेवा के लिये सामर्थ, और आत्मा के असाधारण वरदान, विशेषकर अन्य अन्य भाषा में बोलने का अनुभव प्राप्त करता है। यद्यपि उसके पहले विश्वासी मसीह को ग्रहण कर चुका होता है, उसे पापों की क्षमा और पवित्रीकरण का अनुभव हो चुका होता है, किंतु पवित्र आत्मा के बपतिस्में के अनुभव के बाद ही वह एक अधिक ऊंचे आत्मिक स्तर पर पहुंचता है जिसके कारण वह भरपूरी, आनंद और सामर्थ से युक्त, वास्तविक मसीही जीवन जीने योग्य बन जाता है।

यही यह धर्मशिक्षा है जो पेंटिकुस्तवाद के केंद्र में है पेंटिकुस्तवाद के अन्य लक्षण दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं, जैसे कि अन्य–अन्य भाषाएं बोलना, आश्चर्यकर्म, सभाओं की गर्मजोशी इत्यादि परंतु इस आंदोलन की बुनियाद उसकी उद्धार की एक नयी धर्मशिक्षा अर्थात दूसरा 'बपतिस्मा' पर निर्भर है। सुधारवादी विश्वास में इस धर्म (संप्रदाय) की मूलभूत आलोचना के अनुसार यह उद्धार की गलत धर्मशिक्षा देता है। पेंटिकुस्त विचारधारा वाले *"पवित्र आत्मा का बपतिस्मा"* की पहचान पेंटिकुस्त के दिन 120 व्यक्तियों पर पवित्र आत्मा के उतरने से करते हैं। यही से इस आंदोलन का नाम पेंटिकुस्तवाद निकला है।

अब चूंकि यह माना जाता है कि पवित्र आत्मा बपतिस्मा पाने वालों को असाधारण दान–वरदान देगा, इस आंदोलन को करिश्माई आंदोलन भी कहा जाता है। ग्रीक भाषा के नये नियम में शब्द "वरदान" (दान) का अर्थ *करिश्माटा* है (1 कुरिन्थियों 12:4)। पेंटिकुस्तवाद में जिन दान वरदानों को प्रमुखता दी जाती है, वे है, अन्य–अन्य भाषाएं, उनका अनुवाद, भविष्यद्वाणी करना, आश्चर्यकर्म करना, और दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ। सबसे प्रमुख वरदान अन्य–अन्य भाषाएं बोलना है। इस कारण आंदोलन को कभी–कभी अन्य "भाषा का आंदोलन" भी कहा गया है।

स्थापित प्रोटेस्टैन्ट और रोमन कैथोलिक कलीसियाओं में पेंटिकुस्तवाद पर अमल करने पर इस आंदोलन को नव पेंटिकुस्तवाद का नाम दिया जाता है। 1900 ईस्वी के आरंभ से ही पेंटिकॉस्टल कलीसियाएं अस्तित्व में है, जैसे कि असेम्बली ऑफ गॉड। 1960 के आरंभ में स्थापित प्रोटेस्टैन्ट कलीसियाओं के लोग पेंटिकॉस्टल विश्वासों की वकालत करने लगे और कलीसियाओं में उन पर अमल करने लगे। बिशप डेनिस बेनेट को सामान्यतौर पर उनका अगुवा माना जाता है। इस समय तक ऐसी एक भी कलीसिया नहीं है जो अपने सदस्यों में पेंटिकुस्तवाद की विधियों पर अमल को सहन या अनुमोदित नहीं करती है।

पेंटिकुस्तवाद दावा करता है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्में की उनकी धर्मशिक्षा अनुग्रह का दूसरा कार्य है और कलीसिया में पवित्र आत्मा के असाधारण दान वरदानों की उपस्थिति की शिक्षा बाइबिल सम्मत है। वे प्रेरितों के काम 2, साथ ही प्रेरितों के काम 8, 10 और 19 का संदर्भ लेते हैं कि विश्वासियों के हृदय परिवर्तन के बाद स्पष्ट रूप में उन्हें पवित्र आत्मा दिया गया, पवित्र आत्मा के दिये जाने के बाद विश्वासियों ने बड़ी सामर्थ पायी और उसने उन्हें विशेष दान वरदान दिये। वे हमें 1 कुरिन्थियों 12 को नये नियम की कलीसिया में आत्मा के दान वरदानों के प्रमाण के रूप में दर्शाते है जिनमें चंगाई, आश्चर्यकर्मों को करना, भविष्यद्वाणी, अन्य–अन्य भाषाएं और ऐसे अन्य दान वरदान शामिल है।

पेंटिकुस्तवाद की पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और असाधारण दान वरदानों की शिक्षाओं के प्रत्युत्तर में सुधारवादियों का बाइबिल से क्या उत्तर है?

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है। यह उद्धार का एक आवश्यक अंग है। यीशु के उद्धार के कामों के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के वर्णन में यह अति स्पष्ट है, ''वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मत्ती 3:11, साथ ही पढ़ें, मरकुस 1:18, लूका 3:16, और यूहन्ना 1:33)। परंतु यह नया जन्म पाने के बाद और विश्वास के दान के बाद पवित्र आत्मा का दूसरा कार्य नहीं है, और न ही यह कुछ मसिहीयों तक सीमित है जिन्होंने कुछ शर्तें पूरी की हैं और स्वयं को उद्धार के इस उच्चतर चरण के योग्य बनाया है। आत्मा से मसीह का बपतिस्मा उसका एक उद्धार देने वाला कार्य है जो पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की प्रत्येक चुनी हुई संतान में किया जाता है। यह उस व्यक्ति का नया जन्म है, स्वर्ग से दिया गया नया जन्म–(यूहन्ना 3:1–8)। पापों से शुद्ध करने और परमेश्वर के लिये अलग (पवित्र) किये जाने में पवित्र आत्मा उसके हृदय में उण्डेला जाता है। इस आत्मिक वास्तविकता के लिये यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जल से बपतिस्मा एक चिंन्ह था। कलीसिया में बपतिस्में का संस्कार पवित्र आत्मा के बपतिस्में का एक चिंन्ह है, जैसा तीतुस 3:5–6 की शिक्षा है : ''उसने अपनी दया के अनुसार हमारा उद्धार किया, अर्थात पवित्र आत्मा

द्वारा नये जन्म और नये बनाए जाने के स्नान से किया। इसी पवित्र आत्मा को उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर बहुतायत से उण्डेल दिया।''

यीशु मसीह की कलीसिया में केवल एक ही बपतिस्मा है : वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है जिसमें संकेत रूप में त्रियेक परमेश्वर के नाम में जल का छिड़काव किया जाता है। यह प्रेरितों की शिक्षा है। इफिसियों 4:5 के अनुसार एक ही प्रभु, एक ही विश्वास एवं एक ही बपतिस्मा है, पेंटिकुस्तवाद में दो बपतिस्में है, प्रथम, नीचे स्तर पर बपतिस्मा– पाप से उद्धार (जिसका चिंन्ह जल है), और एक दूसरा उच्च स्तर पर बपतिस्मा, अर्थात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा। इस प्रकार पेंटिकुस्तवाद मसीह, उद्धार और कलीसिया को विभाजित करता है।

मसीह का बपतिस्मा अर्थात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उसके सब लोगों के लिये केवल और केवल क्रूस पर उसकी मृत्यु के कार्य से मिलने वाला वरदान है। यह उन कामों पर आधारित नहीं है जो उन व्यक्तियों को करना अवश्य है। इस कारण यह वरदान परमेश्वर की सब चुनी हुई संतानों को न केवल मिलना चाहिये परंतु मिलता भी है। यूहन्ना ने प्रतिज्ञा की थी ''वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।''

जैसा मसीह ने प्रेरितों के काम 1:18 में अपने चेलों को निर्देश दिया था, यह निश्चित है कि जितने लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं, वे बड़ी सामर्थ प्राप्त करते हैं, ''परंतु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तब तुम सामर्थ पाओगे––––।'' परंतु अवश्य है कि पवित्रशास्त्र हमें सिखाए कि यह सामर्थ कैसी है और कैसे इसका व्यवहारिक उपयोग किया जाता है। जहां तक कलीसिया से इसका संबंध है यह मसीह की साक्षी देने की सामर्थ है––– तुम मेरे साक्षी होंगे (प्रेरितों के काम 1:8)। इस कारण आत्मा से परिपूर्ण कलीसिया की पहचान मसीह का विश्वासयोग्यता से प्रचार है।

जहां तक परमेश्वर की संतान का व्यक्तिगत संदर्भ है, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने बपतिस्में की सामर्थ की प्रकृति की ओर संकेत किया है, जब वे कहते हैं कि हमें "पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा" दिया गया है। हम आत्मा को आग के समान ग्रहण करते हैं, वह आग के समान हममें निवास करता और कार्य करता है। आग कीमती धातुओं के उस मैल को पूरी तरह जलाकर उसे परिशुद्ध करती है जो धातुओं को अशुद्ध करता है। इसी प्रकार, पवित्र आत्मा भी हमारे पाप को जला देता है ताकि हम प्रेम की आज्ञाकारिता में परमेश्वर के लिये अलग (पवित्र) किये जा सके। पवित्र आत्मा के बपतिस्में की सामर्थ पवित्रीकरण की अद्भुत सामर्थ है। पुराने नियम में पवित्र आत्मा के बपतिस्में को लेकर ठीक यही भविष्यद्वाणी की गयी थी। उस दिन जब "यहोवा की डाली" सुंदर और भव्य होगी तथा पृथ्वी का फल शेष बचे हुए इस्राएलियों के लिये गर्व और आभूषण ठहरेगा। "और ऐसा होगा कि जो सिय्योन में बचा रहेगा, और यरूशलेम के जीवित लोगों की सूची में लिखा होगा– वह पवित्र कहलाएगा। जब यहोवा अपने न्याय के आत्मा तथा भस्म करने वाले आत्मा से सिय्योन की स्त्रियों की गंदगी को धो चुकेगा तथा यरूशलेम में बहाए गए लहू को दूर कर चुकेगा।" (यशायाह 4:2–4)।

इस कारण पवित्र आत्मा से बपतिस्मा प्राप्त लोगों की पहचान पाप के कारण दुख (पश्चाताप) और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता (पवित्रता) है।

क्या आपका नया जन्म हो चुका है (निश्चय हो चुका है, यदि आप यीशु मसीह पर विश्वास करते है)? क्या आप अपने पापमय होने और पापों के कारण दुखी है? क्या आपके जीवन में परमेश्वर की व्यवस्था की सभी

आज्ञाओं को मानने का आरंभ हुआ है, भले ही यह बहुत छोटा आरंभ हो? तब आप पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पा चुके हैं, और यह संस्कार एक चिंन्ह और मुहर है कि आपको पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल गया है, जब तक आप जीवित है। कोई आपको धोखा न दे कि आपको एक और बेहतर बपतिस्में को प्राप्त करने की आवश्यकता है।

तब प्रेरितों के काम पुस्तक को कैसे समझा जाये, वहां स्वाभाविक रूप में परमेश्वर के कुछ लोगों पर पवित्र आत्मा के स्पष्ट रूप में दो अलग कार्य है? यीशु के चेले पतरस, यूहन्ना और अन्य सभी पेंटिकुस्त के दिन से पहले ही नया जन्म पा चुके थे, और उनका उद्धार हो चुका था। निश्चय ही ऐसा उनके हृदयों पर पवित्र आत्मा के अनुग्रह के कार्य के कारण हुआ था, परंतु पेंटिकुस्त के दिन ये मनुष्य "पवित्र आत्मा से भर गये" (प्रे.काम 2:4)। पवित्र आत्मा उन पर उण्डेला गया था (प्रेरितों के काम 2:16–18)। तब उन्हें "पवित्र आत्मा से बपतिस्मा" दिया गया था (प्रेरितों के काम 1:5)।

पेंटिकुस्तवाद प्रेरितों के काम में दिये इस इतिहास को बतौर प्रमाण प्रस्तुत करता है और तर्क देता है कि प्रत्येक मसीही के जीवन में अवश्य है कि अनुग्रह के दो स्पष्ट अलग अलग कार्य संपन्न हो– नया जन्म (या हृदय–परिवर्तन) और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा। प्रेरितों के काम पुस्तक में चेलों और अन्य लोगों के अनुभव को परमेश्वर की प्रत्येक संतान के लिये मानक माना गया है। पेंटिकुस्तवाद जोर देता है कि पेंटिकुस्त का अनुभव कलीसिया के सभी सदस्यों के लिये बार–बार दोहराया जाए। पेंटिकुस्तवाद के अग्रणी लेखकों में से एक डॉनल्ड गी प्रत्येक मसीही के लिये ''एक व्यक्तिगत पेंटिकुस्त'' की बात करते हैं *(ए न्यु डिस्कव्हरी)*।

यह विचार पेंटिकुस्त की महान घटना का पूर्ण गलत समझ के साथ विश्वासघात है। व्यक्तिगत पेंटिकुस्त की मांग करना उसी तरह मूर्खतापूर्ण है जिस प्रकार यीशु के व्यक्तिगत अवतार, या उसकी व्यक्तिगत मृत्यु या व्यक्तिगत पुनरुत्थान की मांग करना है।

पेंटिकुस्त मसीह की ओर से उसकी कलीसिया को दिया गया पवित्र आत्मा का विशेष भव्य उपहार (दान) था। पवित्र आत्मा भरपूरी के साथ, अतिशय परिमाण में दिया गया उसे उण्डेला गया। उसे इस प्रकार दिया गया मानो वह यीशु मसीह के संपन्न कार्य के कारण कलीसिया में प्रथम फलों को लाता है, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के लाभ अर्थात मसीह के उद्धार को लाता है। पवित्र आत्मा के वरदान में पुराने नियम की सुसमाचार की प्रतिज्ञा कलीसिया के लिये पूरी की गई है (प्रेरितों के काम 2:38, 39, गलातियों 3:14), क्योंकि परमेश्वर के पुत्र ने परमेश्वर के लोगों को पूर्ण उद्धार दिया– पापों की क्षमा और अनंत जीवन। उसने कलीसिया को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया (प्रे.काम 1:5)। उसने जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से अधिक सामर्थ्यशाली है कलीसिया को वास्तविकता से भर दिया जबकि यूहन्ना केवल चिंन्ह दे सका (मत्ती 3:11)।

उस महान रविवार ने प्राचीन युग की समाप्ति और नये युग के आरंभ की पहचान दी, यह प्राचीन और नये प्रकाशन कालों के बीच की सीमा है। पुराने नियम और नये नियम के बीच का अंतर केवल पवित्र आत्मा की भरपूरी का मसला है, और पवित्र आत्मा की भरपूरी, मसीह के द्वारा संपन्न उद्धार के कार्य के संपूर्ण धन का मसला है। यूहन्ना 7:37–39 में यह शिक्षा दी गई है ''क्योकि पवित्र आत्मा तब तक नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नहीं पहुंचा था।'' पेंटिकुस्त से पूर्व पुराने नियम में पवित्र आत्मा नहीं दिया गया था। वह और उद्धार करने वाले उसके काम तब पूर्ण रीति से अनुपस्थित नहीं थे क्योंकि उसने पुरानी

वाचा के आधीन परमेश्वर के लोगों का उद्धार किया जैसे कि वह आज बचाता है। परंतु वह उद्धार की भरपूरी और समृद्धि के साथ उपस्थित नहीं था जिस प्रकार आज वह कलीसियामें निवास करता है। वह उ स प्रकार निवास कर भी नहीं सकता था, क्योंकि तब तक मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान नहीं हुआ था जो उस प्रचुर और संपूर्ण उद्धार को प्राप्त करने में आवश्यक था। जिस प्रकार शरीर में परमेश्वर के पुत्र का जन्मदिन क्रिसमस था, उसी प्रकार पेंटिकुस्त कलीसिया में मसीह के आत्मा का "जन्मदिन" था।

पेंटिकुस्त भी मसीह के अवतार, क्रूस पर चढ़ने, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण के समान सदा के लिये एक ही बार की घटना थी। उसके जी उठने के 50 दिनों बाद यीशु ने अपनी आत्मा को अपनी कलीसिया में भेजा। यह बाद में कभी दोहराया नहीं गया जैसे यीशु की मृत्यु दोहराई नहीं गयी। मसीहियों के लिये व्यक्तिगत पेंटिकुस्त का प्रचार करना यदि गलत शिक्षा नहीं है तो मूर्खता अवश्य है। यही कारण है कि कलीसिया के इतिहास में पेंटिकुस्त के चिंन्हों के दोबारा प्रकट होने की आशा करना गलत विचार है। प्रचण्ड आंधी के जैसी आवाज, आग जैसी जीभें का फटना, और चेलों का अन्य–अन्य भाषाएं बोलना, इत्यादि चिंन्ह पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने की ऐतिहासिक घटना में सदा के लिये केवल एक ही बार हुये जैसे कि एक बड़ा भूकंप मसीह के पुनरुत्थान का चिंन्ह था। यकीनन्, आज 20वीं शताब्दी में ये चिंन्ह मेरे लिये ठीक वैसे ही हैं जैसे 33 ईसवी में पतरस के लिये थे। वे मेरे लिये है, इसलिये नहीं कि वे मेरे अनुभव में दोहराये गये है, परंतु इसलिये कि उनका उल्लेख पवित्र शास्त्र के पन्नों में किया गया है और उन्हें विश्वास के द्वारा ग्रहण किया गया है।

जब पेंटिकुस्त विचारधारा वाले पेंटिकुस्त के इस "सदा के लिये एक ही बार" के लक्षण को नकारते है, तब वे प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिये उन वृतान्तों पर संकेत करते हैं जिनमें लगता है कि पेंटिकुस्त का अनुभव दोहराया गया है– सामरियों पर पवित्र आत्मा का उतरना (प्रेरितों के काम 8:5–24); कुरनेलियुस और उसके घराने पर पवित्र आत्मा का उतरना (प्रेरितों के काम 10:44–48, प्रेरितों के काम 11:15–18); और यूहन्ना के चेलों पर पवित्र आत्मा का उतरना (प्रेरितों के काम 19:1–7)। वास्तव में ये घटनाएं, विशेष घटनाएं हैं, परमेश्वर ने इन्हें इसलिये होने दिया ताकि पेंटिकुस्त के दोहराये न जाने वाले आश्चर्यजनक कार्य संपूर्ण कलीसिया को प्राप्त हो सके विशेषकर अर्ध अन्यजातीय (सामरी) और पूर्ण अन्यजातीय (कुरनेलियुस का घराना) और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले। ये घटनाएं पूर्ण कलीसिया में पेंटिकुस्त का विस्तार है अर्थात पेंटिकुस्त के कार्य का बाहर की ओर फैलना।

पेंटिकुस्त के महत्व के प्रकाश में, हम आसानी से यह समझ सकते हैं कि पेंटिकुस्त के दिन पहले से उद्धार पा चुके स्त्री पुरुषों ने पवित्र आत्मा का दान पाया ताकि वे उद्धार के नये धन का और उस सामर्थ का आनंद ले सके जो अब तक उनके लिये अनजान था। यह प्रत्येक मसीही के जीवन में अनुग्रह के दो कामों का संकेत नहीं है। यह सभी विश्वासियों के लिये मानक नहीं है, अर्थात हमें यह आशा और लालसा नहीं करनी चाहिये कि "केवल विश्वास से उद्धार" के बाद "आत्मा के बपतिस्मे" में भावनाओं और सामर्थ के उच्चतर स्तर को प्राप्त करे। यह व्याख्या पेंटिकुस्त के अनुभव से गुजरे संतों की अद्वितीय ऐतिहासिक स्थिति से प्रकट है। उन्होंने प्रकाशन के पुराने काल से प्रकाशन के नये काल और पवित्र आत्मा न दिये जाने से दिये जाने तक, मसीह के महिमा प्राप्त न करने और महिमा प्राप्त करने तक के संधिकाल में जीवन जिया। उन क्षणों से पूर्व उन संतों का उद्धार हो चुका था, अब प्रकाशन के नये युग की भोर में उन्होंने पवित्र आत्मा का दान उसकी भरपूरी के साथ पाया, अर्थात महिमान्वित मसीह में संपूर्ण उद्धार। पेंटिकुस्त के

दिन वे अनुग्रह के प्रथम स्तर से दूसरे में नहीं गये जो उच्चतर था, परंतु पुरानी वाचा की कलीसिया के शिशुकाल से नयी वाचा की कलीसिया की परिपक्वता में गये (गलातियो 4:1–7)।

हम इस सुझाव का खंडन करते हैं कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति को पेंटिकुस्त का अनुभव दोहराना चाहिये। इस विषय पर हमें कुछ समय के लिये प्रकाशन के प्राचीन काल में जाना चाहिये और प्रतीकों और तस्वीरों की व्यवस्था के आधीन जीवन बिताना चाहिये, ताकि कुछ समय के बाद हम प्रकाशन के नये काल (युग) में प्रवेश कर सके। यदि हमारे लिये ऐसा करना संभव होगा, हम गलातियो और इब्रानियों को मिली चेताविनायां सुनकर उनको अस्वीकार कर देंगे।

हम नये नियम के संत महिमा प्राप्त मसीह की आत्मा को संपूर्ण मसीह और उसके समस्त लाभों के साथ तब तुरंत प्राप्त करते हैं, जब परमेश्वर हमें नया जीवन देते हैं, हम में अपना निवास बनाते हैं, हमें मसीह की देह में बपतिस्मा देते हैं अर्थात कलीसिया में, और एक सच्चे और जीवित विश्वास के द्वारा मसीह के साथ जोड़ते है। निश्चय पेंटिकुस्त की आशीष हमारी है, उसका एक–एक अंश हमारा है जैसा वह यरूशलेम की उपरौठी कोठरी के 120 व्यक्तियों का था। निश्चय ही हम पेंटिकुस्त के भागीदार है, उसी वास्तविकता और संपूर्णता में जैसी उन 120 विश्वासियों की भागीदारी थी। यह उतना ही आवश्यक है जितना मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में हमारी भागीदारी आवश्यक है। यदि कोई मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान या पेंटिकुस्त का भागीदार नहीं है, सरल शब्दों में उसका उद्धार नहीं हुआ है। परंतु मैं मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान या पेंटिकुस्त का भागी इस लिये नहीं हूं क्योंकि मेरा उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ व्यक्तिगत संबंध या अनुभव है। मैं मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास के द्वारा भागी हूं। विश्वास के द्वारा मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ओर उसके साथ जी उठा, इसी प्रकार उसी विश्वास के द्वारा मैं पेंटिकुस्त में भागीदार हूं। उस महान दिन आज से लगभग 2000 वर्ष पहले की आशीषें विश्वास के द्वारा मेरी व्यक्तिगत हो जाती है, पवित्र आत्मा के द्वारा मुझ में काम करती है, और मुझे मसीह और उसकी देह अर्थात कलीसिया से जोड़ती है, जिसे तब पवित्र आत्मा दिया गया और जिसमें पवित्र आत्मा सदैव निवास करता है। यहीं गलातियों 3 की शिक्षा है : "और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करे जिसकी प्रतिज्ञा की गई है" (पद 14)।

अन्य–अन्य भाषा का दान

पेंटिकुस्तवाद के दो अन्य प्रमुख लक्षण है, प्रथम उसकी धर्मशिक्षा और आत्मा के असाधारण दान वरदानों विशेषकर अन्य–अन्य भाषा के प्रमाण का दावा करते हैं। इस बारे में कुरिन्थियों 12–14 उनकी इस शिक्षा का आधार है। उनकी शिक्षा और विचार के बारे में सुधारवादियों का क्या उत्तर है?

प्रेरितों के दिनों में अन्य–अन्य भाषाओं का वरदान था आप इस वरदान को बिना सीखे विदेशी भाषाएं बोलने की योग्यता के रूप में ले अथवा किसी ऐसी भाषा को बोलने की योग्यता माने जो पूरी तरह नयी अनजानी भाषा है। 1 कुरिन्थियों 14 में संकेत मिलता है कि अन्य–अन्य भाषाओं के वरदान का एक पहलू उन दिनों में एक बिल्कुल नयी, अनजानी भाषा बोलने की क्षमता या योग्यता थी। कोई भी, यहां तक कि बोलने वाला भी नहीं समझता था कि क्या कहा गया (पद 2, 14)। अन्य–अन्य भाषाओं का अनुवाद करना भी अन्य–अन्य भाषाएं बोलने के समान पवित्र आत्मा का एक वरदान था (पद 13, 1 कुरिन्थियों 12:10)। अन्य अन्य भाषाओं में बोलने वाला मनुष्यों से नहीं परंतु परमेश्वर से बात करता था (पद 2)। इसका लाभ दूसरों की नहीं परंतु स्वयं की उन्नति था (पद 4)। "आत्मा में" अन्य अन्य भाषा बोलने वाला "भेद की बातें" बोलता है (पद 2)।

उन दिनों में पवित्र आत्मा के अन्य असाधारण दान वरदान भी थे–परमेश्वर से विशेष प्रकाशन प्राप्त करने का वरदान, दुष्टात्माओं को निकालने का वरदान, सांपों को उठा लेने का वरदान, बिना किसी हानि के घातक वस्तुएं पी लेने का वरदान, बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करने का वरदान, और मृतकों को जिलाने का वरदान (मरकुस 16:17–18, 1 कुरिन्थियों 12:1–11)।

इन सब दान वरदानों में अन्य अन्य भाषाओं को बोलने का वरदान अपेक्षाकृत कम महत्व का है। दान वरदानों की सूची 1 कुरिन्थियों 12:28–31 में अन्य अन्य भाषायें बोलना और उनका अनुवाद करना सबसे अंत में है और उन "सर्वोत्तम वरदानों" में शामिल नहीं है, जिनकी धुन में कुरिन्थियों को रहना चाहिये। 1 कुरिन्थियों 14:39 में कुरिन्थियों को केवल यह कहा गया है कि अन्य अन्य भाषा बोलने से मना मत करो, जबकि वहां भविष्यद्वाणी करने की धुन को प्रोत्साहित किया गया है। संपूर्ण 1 कुरिन्थियों 14 में प्रेरितों ने भविष्यद्वाणी करने की तुलना में अन्य अन्य भाषाओं के महत्व को कमतर दर्शाया है, जबकि कुरिन्थियों के बीच प्रचलित अन्य अन्य भाषाओं के बहुत से दुरुपयोगों पर चर्चा की गयी है। साथ ही अन्य अन्य भाषाओं का वरदान सभी कुरिन्थियों को प्राप्त नहीं था, और न ही सबके द्वारा उसे धारण करने की अपेक्षा की गयी थी (1 कुरि. 12:20)। कम से कम कहा जाये तो यह बात बड़ी अजीब लगती है कि नये नियम की मसीहत के पुर्नगठन पर अपने पूरे लाव–लश्कर के साथ जोर देते हुए पेंटिकुस्तवाद अन्य अन्य भाषा बोलने के पवित्र आत्मा के वरदान को सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूप में *सर्वोत्तम* ठहराता है, जबकि उसे प्रेरितों के दिनों में भी इतना महत्व नहीं दिया गया था। और पेंटिकुस्तवाद का यह आग्रह कि प्रत्येक मसीही को यह वरदान (अनिवार्य रूप में) पाना ही चाहिये, कि मानो पौलुस ने यह कभी नहीं लिखा हो ''क्या सब अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं?''

आज आश्चर्यकर्मों को लेकर पेंटिकुस्तवाद का तर्क सरल है – पवित्रशास्त्र के अनुसार अद्‌भुत कार्य प्रेरितों के दिनों में कलीसिया के जीवन और सेवकाई का अंग थे, इस कारण आज भी आश्चर्यकर्म करने का वरदान कलीसिया में होना चाहिये।

पेंटिकुस्तवाद पवित्र शास्त्र की इस शिक्षा की अनदेखी करते हैं कि आश्चर्यकर्म "प्रेरितों के चिंन्ह" थे। आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ प्रेरिताई के पद से जुड़ी थी और उसका उद्देश्य प्रेरितों को मसीह का विशेष सेवक और उनकी धर्मशिक्षाओं को परमेश्वर का सुसमाचार साबित करना था इसका अभिप्राय यह नहीं है कि केवल प्रेरित ही आश्चर्यकर्म कर सकते थे। वास्तव में, अन्य संतों को भी आश्चर्य कर्म संपन्न करने का वरदान दिया गया था। यहां कहने का अभिप्राय यह है कि आश्चर्यकर्मों का संबंध प्रेरिताई से है, यह उस समय की कलीसिया में प्रेरितों के पद से व्युत्पन्न था और प्रेरितों एवं उनकी धर्मशिक्षा को सत्यापित करता था। आश्चर्यकर्म करना प्रेरितों की योग्यता (पद) की पहचान थी।

प्रेरितों के युग में आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता का कारण उनका विशिष्ट परिश्रम था। उन्होंने नये नियम की मसीह की कलीसिया की नींव रखी। पौलुस ने इफिसियो 2:20 में लिखा है कि अन्य जातीय विश्वासीजन, और इस्राएल के पवित्रजन, प्रेरितों तथा भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाये गये हो। प्रेरितगण कलीसिया की नींव है, और मसीह कोने का पत्थर है। वे उस वचन के कारण जो उन्होंने प्रचार किया और लिखा नींव बने। इसी प्रकार, 1 कुरिन्थियों 3:10 में पौलुस कुरिन्थ में कलीसिया की नींव रखने का दावा करता है जबकि अन्य लोगों ने उस नींव के ऊपर निर्माण किया : ''परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे प्रदान किया गया है, मैंने एक कुशल राजमिस्त्री की भांति नींव डाली और दूसरा उस पर रद्दा रखता है....।''

आश्चर्यकर्म जिनमें अन्य अन्य भाषा बोलने का आश्चर्यकर्म भी शामिल है, वे प्रेरिताई के पद का एक भाग थे, यह 2 कुरिन्थियों 12:12 की शिक्षा है : "सच्चे प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे मध्य में चिन्हों आश्चर्यकर्मों और चमत्कारों के साथ बड़े धैर्य से प्रदर्शित किये गये।" पौलुस कुरिन्थ में उसकी प्रेरिताई पर प्रश्न करने वालों के प्रत्युत्तर में अपनी प्रेरिताई के पक्ष में बोल रहा था। पद 11 में वह शोकित होता है, कि कुरिन्थियों ने उसकी सराहना नहीं की ''यद्यपि मैं कुछ भी नहीं फिर भी उन महाप्रेरितों से किसी भी तरह कम नहीं हूं।'' कुरिन्थियों को पौलुस के प्रेरित पद को मान्यता देना और सम्मान देना चाहिये था, क्योंकि मसीह ने उसके द्वारा किये गये आश्चर्यकर्मों में स्पष्ट प्रमाण दिये कि वे आश्चर्यकर्म प्रभु ने किये थे। आश्चर्यकर्मों को चिंन्ह, अद्‌भुत कार्य, और सामर्थ के काम कहा गया है। उन्हें एक "प्रेरित होने के चिंन्ह" कहा गया है शाब्दिक अर्थ में हम उन्हें "प्रेरितों के चिन्ह" पढ़ते हैं। आश्चर्यकर्म प्रेरित पद के अस्तित्व और सामर्थ के सांकेतक है। वे प्रेरितों के पद से संबंधित है।

इब्रानियों 2:3–4 भी पवित्र आत्मा के असाधारण दान वरदानों को प्रेरितों के पद से संबंध जोडता है। अध्याय की प्रथम तीन पदों में ऐसे "महान उद्धार की उपेक्षा" न करने की चेतावनी दी गई है। व्यक्ति इस विषय में दोषी ठहरता है यदि वह परमेश्वर के वचन पर समुचित ध्यान देने से इन्कार करता है। क्योंकि हमें यह उद्धार वचन के द्वारा मिला है– ''हम ऐसे महान उद्धार की उपेक्षा करके कैसे बच सकेंगे? इसका वर्णन सर्वप्रथम प्रभु द्वारा किया गया और इसकी पुष्टि सुनने वालों ने हमारे लिये की?'' महान उद्धार बोलकर बताया गया हमने उसे सुनकर ग्रहण किया। यह वृतान्त परमेश्वर के वचन के प्रचार को उद्धार के साधन के रूप में प्राथमिक बनाता है यहां तक कि प्रेरितों के युग में भी न तो आश्चर्यकर्म और न ही पवित्र आत्मा के असाधारण दान वरदान, परंतु परमेश्वर के वचन का प्रचार ही प्रमुख बात थी। आश्चर्यकर्म द्वैतीयक थे, प्रेरितों की धर्मशिक्षा में आवश्यक रूप में उनका प्रथम स्थान नहीं था।

परंतु यह वृतान्त स्पष्ट रूप में यह सिखाता है कि आश्चर्यकर्म प्रेरितों के पद और सेवकाई से संबंधित थे। लेखक ने कहा है कि नये नियम के पवित्रजन, विशेषकर इब्री मसीहीजनों ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया जिसने उन्हें उद्धार तक पहुंचाया। उन्हें इस वचन पर ध्यान देना था और इससे दूर नहीं जाना था ''इस कारण हमें चाहिये कि– "जो कुछ हमने सुना है उस पर और अधिक गहराई से ध्यान दें ऐसा न हो कि हम उससे भटक जायें।'' हम परमेश्वर के वचन को कैसे पाते हैं? सबसे पहले स्वयं प्रभु यीशु ने उसे कहा तब उनके द्वारा प्रमाणित किया गया "जिन्होंने उसे सुना।" ये प्रेरित है, इन प्रेरितों के बारे में पद 4 में लेख है ''परमेश्वर ने भी चिन्हों, चमत्कारों और विभिन्न प्रकार के आश्चर्यकर्मों तथा अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा इसकी साक्षी दी।'' आश्चर्यकर्मों के संदर्भ में 2 कुरिन्थियों 12:12 में लेख है ''चिन्हों, आश्चर्यकर्मों और चमत्कारों के साथ'', यहां अंतिम शब्द चमत्कार वहीं है जिसे "सामर्थ के काम" भी अनुवाद किया गया है (2 कुरि. 12:12)। आश्चर्य की बात है कि इस वृतान्त में "पवित्र आत्मा के दान वरदानों" का भी उल्लेख है। कलीसिया में शब्द दान वरदान का बेहतर अनुवाद वितरण या बंटवारा हो सकता है। पवित्र आत्मा का वितरण प्रेरितों के युग में कलीसिया में पवित्र आत्मा के असाधारण दान वरदान है। इन दान वरदानों में "अनेक प्रकार की भाषाएं" बोलना और "अन्य अन्य भाषाओं का अनुवाद" करना भी शामिल है। जैसा 1 कुरिन्थियों 12:10 में दर्शाया गया है आश्चर्यकर्म और पवित्र आत्मा के असाधारण वरदान मसीह को सुनने वालों अर्थात प्रेरितों के लिये परमेश्वर की साक्षी थे, प्रेरितों द्वारा हमारे लिये मसीह के वचन की पुष्टि करना, इस साक्षी का उद्देश्य था। अर्थात प्रेरिताई धर्मशिक्षा को परमेश्वर के निज वचन के रूप में प्रमाणित (स्थापित) करना। आश्चर्यकर्म और असाधारण दान वरदान सदाकाल के लिये नहीं है, परंतु प्रेरितों

के युग के लिये थे। वे प्रेरिताई के पद के लिये ईश्वरीय इच्छा के कारण थे ताकि वे उस वचन को प्रमाणित कर सके जिसे प्रेरितों ने प्रचार किया।

यही बात मरकुस 16:20 में सिखाई गई है–और उन्होंने (प्रेरितों ने जिन्हें जी उठे मसीह ने आदेश दिया कि सारे जगत में जाये और सुसमाचार का प्रचार करें डी.जे.ई.) वे सब जगह प्रचार करने गये, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और वचन को उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे दृढ़ करता रहा। चिन्ह या आश्चर्यकर्म प्रेरितों के द्वारा किये गये वचन के प्रचार की परमेश्वर द्वारा सामर्थशाली प्रमाण थे। इसी तरीके से प्रभु ने अपने प्रेरित पौलुस और उसके सहकर्मी बरनबास के द्वारा प्रचारित वचन को प्रमाणित किया– ''इसलिये वे वहां बहुत दिनों तक रहे, और प्रभु पर भरोसा रखते हुये निर्भयता से प्रचार करते रहे और प्रभु उनके हाथों से चिंन्ह और अद्‌भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचनों की साक्षी देता रहा'' (प्रेरितों के काम 14:3)।

प्रेरिताई का पद कलीसिया में स्थायी नहीं किंतु अस्थायी पद था। प्रेरितों की अर्हता से यह स्पष्ट है। प्रेरित के लिये अवश्य था कि उसने जी उठे यीशु को देखा हो ताकि वह पुनरुत्थान का प्रचार कर सके जिसका वह स्वयं चश्मदीद गवाह है (1 कुरिन्थियों 9:1), उसे जी उठे प्रभु ने सीधे बुलाहट और सेवा का प्रभार दिया हो (यूहन्ना 20:21, प्रेरितों के काम 26:15–18), जिसमें स्वयं यीशु से सुसमाचार प्राप्त करना शामिल है (गलातियो 1:11–12)।

प्रेरितों के विशेष कार्य भी उनके पद के स्थायी न होने की ओर संकेत करते हैं। यह कार्य था कलीसिया की नींव रखना। कोई व्यक्ति सदैव नींव रखने का काम नहीं करता। एक समय आता है जब नींव रखने का काम पूरा हो जाता है। तब वे जिनका काम नींव धरना है उनका काम समाप्त हो जाता है और तब अन्य दूसरे जिनकी बुलाहट नींव पर निर्माण करने की है अर्थात् पास्टर और शिक्षक उन्हें कलीसिया सौंप दी जाती है।

यदि प्रेरितों का पद अब समाप्त हो गया है तो अवश्य है कि आश्चर्यकर्म भी समाप्त हो गये हैं (अर्थात प्रेरिताई के चिंन्ह) क्योंकि आश्चर्यकर्म प्रेरिताई के पद का अंग थे और उस सेवकाई को करते थे।

इसी विचार के तारतम्य में जो आज भी आश्चर्यकर्म होने पर जोर देते हैं उन्हें प्रेरितों को भी उत्पन्न करना चाहिये। भला हो कि पेंटिकुस्त विचारधारा के समर्थक प्रेरितों को खड़ा करें। यह उल्लेखनीय है कि 1800 में इंग्लैंड में पेंटिकुस्तवाद से पूर्व इरबिन के आंदोलन ने जिनके प्रणेता एडवर्ड इरबिन थे, बारह प्रेरितों की नियुक्ति की थी। ऐसा करके आंदोलन ने सामंजस्य किया गया। यह बात उल्लेख करने योग्य है कि भले ही उन्हें प्रेरित कहने में संकोच करे, पेंटिकुस्तवाद में आज उनके अगुवों को वे अधिकार प्राप्त हैं जो केवल प्रेरितों के पास थे–कलीसिया अथवा सहभागिता पर व्यक्तिगत एवं संपूर्ण अधिकार (सत्ता) या कलीसिया के लिये परमेश्वर से उसकी इच्छा के नये प्रकाशनों को प्राप्त करना, बाइबिल के अतिरिक्त अन्य शिक्षायें जिन्हें पालन करना संतों की बाध्यता है।

कलीसियाई इतिहास पवित्रशास्त्र की इस शिक्षा के सत्य का साक्षी है कि आश्चर्यकर्म और असाधारण दान–वरदान अस्थायी (अल्पकाल के लिये) थे। कलीसिया में लगभग 100 ईस्वी के आसपास, लगभग अंतिम प्रेरित की मृत्यु हो जाने पर आश्चर्यकर्म होना बंद हो गये। इस समय के बाद विधर्मी और संप्रदायवादी कलीसियाई प्रभागों ही ने आश्चर्यकर्म करने के दावे किये हैं उदाहरण के लिये मोन्टानिस्ट (दूसरी शताब्दी

का एक संप्रदाय जिसके प्रणेता मॉन्टेनुस थे)। समय बीतने पर आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ के दावे एक बार फिर रोमन कैथोलिक चर्च में उठने और प्रभाव डालने लगे, परंतु महत्वपूर्ण बात है कि इसके साथ ही कलीसिया सुसमाचार के सत्य से दूर होने लगी। रोमन कैथोलिक चर्च ने निसंदेह सदैव ही आश्चर्यकर्मों की सामर्थ के दावे किये हैं और इन चमत्कारों से अपने सदस्यों को सम्मोहित किया है।

सुधारवादियों की पवित्रीकृत कलीसिया स्पष्ट रूप में सब आश्चर्यकर्मों से इंकार करती है। सुधारवादियों का सामना आश्चर्यकर्मों के दो क्षेत्रों में किया गया – रोम और अनाबेप्टिस्ट (पुनःदीक्षा) समूहों और उनके रहस्यवादी ''आत्मा के धर्म'' के द्वारा। रोम और इन रहस्यवादियों दोनों ही ने आश्चर्यकर्मों को एक प्रमाण बताया कि उनके धर्म वास्तविक (सच्चे) हैं और सुधारवादियों पर आश्चर्यकर्म से रहित होने के ताने कसे। उन्होंने सहज संज्ञान से मसले के मर्म पर चोट की और आज भी पेंटिकुस्त के संबंध में यह मसले का मर्म है, लूथर ने लोगों का आहवान किया कि वे परमेश्वर पर विश्वास रखे, उसके वचन के अनुसार जीवन जीयें, और वचन पर दृढ़ बने रहें, यद्यपि विधर्मी आश्चर्यकर्मों के सघन बर्फीले तूफान के द्वारा लोगों को सत्य से दूर करने प्रलोभित कर रहे थे। जॉन कैल्विन ने सुधारवादियों की विचारधारा (पक्ष) की अधिक विस्तार से व्याख्या की है –

> *हमसे आश्चर्यकर्म की मांग करते हुये वे बेईमानी से कार्य करते हैं, क्योंकि हमने कोई नया सुसमाचार नहीं बनाया है, परंतु उसे ही स्थिर रखा है जिसके सत्य को मसीह और प्रेरितों द्वारा सम्पन्न आश्चर्यकर्मों ने प्रमाणित किया है। परंतु उनमें एक वैशिष्ठय था जो हम में नहीं है वे अपने विश्वास को लगातार आश्चर्यकर्मों के द्वारा आज के दिन तक प्रमाणित कर सकते है। ऐसा नहीं है, कथित तौर पर वे आश्चर्यकर्मों के द्वारा शांत और स्थिर चित्त में संदेह और अस्थिरता उत्पन्न कर सकते हैं, वे तुच्छ और हास्यास्पद है, इस कारण झूठे और व्यर्थ है। और भले ही वे अत्याधिक अद्भुत हो वे परमेश्वर के सत्य के विरुद्ध प्रभावहीन है। जिसका (परमेश्वर का) नाम सदैव, सब स्थानों में पवित्र माना जाना चाहिये, चाहे आश्चर्यकर्मों के द्वारा और चाहे घटनाओं के स्वाभाविक क्रम में। यह धोखा और भी अधिक प्रकट रूप में होता यदि पवित्रशास्त्र हमें आश्चर्यकर्मों के उपयोग और वैध लक्ष्य के बारे में चेतावनी नहीं देता। मरकुस हमें बताते हैं (मरकुस 16:20) कि प्रेरितों के प्रचार के बाद होने वाले आश्चयकर्मों ने प्रचार की पुष्टि की। लूका भी यही कहते हैं कि प्रभु "उनके हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवा कर अपने अनुग्रह के वचन की साक्षी देता रहा" (प्रेरितों के काम 14:3); और हम यह भी स्मरण रखें कि शैतान भी आश्चर्यकर्म करता है, यद्यपि वे वास्तव में चमत्कार नहीं परंतु चालबाजियां होते हैं फिर भी वे अज्ञानियों और असावधान लोगों को भ्रमित करते हैं।* (इंस्टीट्यूट्स, फ्रांस के राजा के लिये प्रारंभिक संबोधन)

पेंटिकुस्तवाद के चमत्कार रोम के आश्चर्यकर्मों के समान ही धोखाधड़ी है। वे उन आश्चर्यकर्मों के भाग या खंड हैं जिनकों पवित्रशास्त्र की भविष्यद्वाणियां अंत समय के आश्चर्य कर्म कहती है, अर्थात झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के चिंन्ह और चमत्कार जो चुने हुओं को भी भरमा दे, यदि संभव हो (मत्ती 24:24); पाप के पुरुष (अधर्मी) के सामर्थ और चिन्हों और झूठे आश्चर्यकर्मों के द्वारा वे धोखा पायेंगे जो सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं करते (2 थिस्स.2:9–12)।

सावधान! आधुनिक युग के चमत्कार बेचनेवालों द्वारा आंखों में धूल झोंकने से बचें!

सुधारवादी कलीसिया को आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। उनका विश्वास प्रेरितों की धर्मशिक्षा है जो उन्हें मसीह से मिली है। यह धर्मशिक्षा बहुत से आश्चर्यकर्मों के द्वारा प्रमाणित हो चुकी है। इस अब और सत्यापन की आवश्यकता नहीं है। केवल एक नये सुसमाचार को नये आश्चर्यकर्मों (के प्रमाण) की आवश्यकता है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि सुधारवादी धर्म बिना आश्चर्यकर्मों का धर्म है। पेंटिकुस्तवाद इस धारणा की पुष्टि करना चाहता है कि उनका सुसमाचार आश्चर्यकर्मों के साथ है, अर्थात संपूर्ण सुसमाचार है, जबकि सुधारवादी विश्वास आश्चर्यकर्मों से रहित सुसमाचार है, और इस कारण संपूर्ण सुसमाचार से कमतर है।

प्रथम, सुधारवादी विश्वासी समस्त सृष्टि और पृथ्वी के जीवन के हर पहलू में परमेश्वर की सर्वशक्तिमान सामर्थ को देखते (मानते) हैं। प्रतिदिन सूर्य का उदय होना, प्रकृति में प्रतिवर्ष बसंत का आगमन, एक गुलाब का खिलना, एक बच्चे का गर्भ में आना, भूकंप की प्रक्रिया में होने वाली उथल पुथल, देशों का उत्थान और पतन, स्वास्थ्य और जीवन, भोजन की मेज पर रोटी का एक टुकड़ा, सभी कुछ सब स्थानों में उपस्थित परमेश्वर की अगम्य और सर्वशक्तिमान सामर्थ के कारण है। हमारे विश्वास का मसीह संप्रभु परमेश्वर है जो वर्तमान में भी सब वस्तुओं को अपने सामर्थ के वचन के द्वारा सर्वाधिक अद्‌भुत तरीके से संभालता है और उन पर शासन करता है (इब्रानियों 1:3)।

दूसरा, हम सुधारवादी उन सभी आश्चर्यकर्मों को अपना मानते हैं जो पवित्रशास्त्र के पन्नों पर अंकित है। यह विचार मूर्खतापूर्ण है कि आश्चर्यकर्म तब तक आश्चर्यकर्म नहीं है यदि वे व्यक्ति द्वारा संपन्न न किये जाये या फिर उसकी आंखों के सामने न हो। संसार के सृजन का आश्चर्यकर्म, जलप्रलय का आश्चर्यकर्म, एलिय्याह के चढ़ाये बलिदान को भस्म करने वाली यहोवा की आग का आश्चर्यकर्म, मसीह के अवतार का आश्चर्यकर्म, पतरस द्वारा दोरकास को जिलाने का आश्चर्यकर्म, और अन्य सभी आश्चर्यकर्म सभी मेरे हैं और उतने ही सत्य हैं, मानों मैंने उन्हें अनुभव किया है, केवल इस कारण नहीं कि उनसे उस कलीसिया को छुटकारा मिला, जिसका मैं एक सदस्य हूं, परंतु इसलिये भी कि वे मुझे हैरान करते हैं, परमेश्वर की प्रशंसा का भाव लाते हैं और उसके वचन में मेरे विश्वास को दृढ़ करते हैं, वे ऐसे हैं मानों मैंने उन्हें अपनी निज आंखों से घटते देखा है। सुधारवादी विश्वासी के पास बाइबिल में आश्चर्यकर्मों की भरमार है। कोई भी अतिरिक्त आश्चर्यकर्म जो प्रभु यीशु के आगमन से पहले है, आवश्यकता से अधिक होगा।

तीसरा, सुधारवादी कलीसिया द्वारा प्रचारित वचन लगातार बहुत से महान आश्चर्यकर्मों को संपन्न करता है। वह आत्मिक मुर्दों को जिलाता है, वह आत्मिक अंधों की आंखें खोलता है, वह आत्मिक लंगड़ों को हिरन के समान कुलांचे भरने योग्य बनाता है, वह मनुष्यों के हृदयों और जीवनों में शैतान के गढ़ों को धराशायी करता है (यशायाह 35, 2 कुरिन्थियों 10:3–6)। पवित्र आत्मा की सामर्थ से सत्य उद्धार के आश्चर्यकर्म को संभव बनाता है, अर्थात विश्वास पश्चाताप, पापों की क्षमा और पवित्रता। ये सभी विस्मयकारी सामर्थ के कार्य है, और यदि हम तुलना करना चाहे ये आश्चर्यकर्म शारीरिक चंगाई के आश्चर्यकर्मों से कहीं बढ़कर है, उन क्षुद्र और बेतुके आश्चर्यकर्मों की बात न भी करे जिन पर पेंटिकुस्तवादी अकसर गर्व करते हैं। सुसमाचार के आत्मिक आश्चर्यकर्म वास्तव में वह वास्तविक है जिनके लिये यीशु और उनके प्रेरितों द्वारा संपन्न शारीरिक चंगाई के आश्चर्यकर्म चिंन्ह स्वरूप थे।

नहीं, सुधारवादी कलीसिया आश्चर्यकर्मों से रहित कलीसिया नहीं है।

हमारा मुख्य उद्देश्य पवित्रशास्त्र से पवित्र आत्मा के बपतिस्में की धर्मशिक्षा और आश्चर्यकर्मों विशेषकर अन्य अन्य भाषा पर उनके अमल के पक्ष में पेंटिकुस्तवाद के तर्कों का प्रत्युत्तर देना था और यह किया जा चुका है। पवित्रशास्त्र के आधार पर हमने पेंटिकुस्तवाद की विचारधारा को उद्धार की उनकी धर्मशिक्षा (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) को गलत धर्मशिक्षा और आश्चर्यकर्मों को धोखा दर्शाया है।

सुधारवादी विश्वास पेंटिकुस्तवाद को लूथर, कैल्विन, और सुधारवादी अंगिकारों के विपरीत एक अलग धर्म मानता है जो पवित्रजनों को एक ही बार दिये गये विश्वास से एक मौलिक अलगाव है।

अध्याय–2

पेंटिकुस्तवाद की आत्मा का सुधारवादी परीक्षण

पेंटिकुस्तवाद कलीसिया में और उसके सदस्यों के जीवन से परमेश्वर के वचन को हटाकर अनुभव अर्थात मानवीय भावनाओं को प्रमुखता देता है। यह उनकी मूलभूत गलतियों में एक है, आवश्यक रुप में यह परमेश्वर के वचन पर एक आक्रमण है, चाहे परमेश्वर के वचन को पूरी तरह हटा दिया जाये, अथवा वचन को पीछे ढकेल दिया जाये या फिर वचन के साथ साथ अनुभव को मान्यता दी जाये। यह आंदोलन धर्मशिक्षा को गिराता और रुढ़िवादियों का उपेक्षाजनक उल्लेख करता है। सुप्रसिद्ध पेंटिकॉस्टल प्रचारक, अल्बर्ट बी. सिम्पसन ने खरी धर्मशिक्षा के प्रति पेंटिकुस्तवाद का दृष्टिकोण अभिव्यक्त करते हुये कहा कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मेरे "रूढ़िवादी सिद्धांतों की अंतिम क्रिया है।" जहां जहां भी वह दिखाई देता है, पेंटिकुस्तवाद विश्वास वचनों से दूर भागता है। "वरदानों" में एक जिसे उन्होंने पुर्नगठित किया है, वह है विशेष प्रकाशन जो सीधे परमेश्वर की ओर से निश्चित "भविष्यद्वक्ताओं" को दिया जाता है। यह वास्तव में पवित्रशास्त्र के संपूर्ण अधिकार और सर्व पर्याप्तता से इंकार करना है, अर्थात sola scripture (केवल पवित्रशास्त्र) पर प्राणघातक चोट है। परमेश्वर के वचन से सुनना और विश्वास करना अब केंद्रीय विचार नहीं रहा परंतु आत्मा के बपतिस्मा का अनुभव केंद्रीय बन गया है।

परमेश्वर के वचन का स्थान अनुभव को देना पेंटिकुस्तवाद में प्राचीन रहस्यवाद की गलत शिक्षा (विधर्मिता) के एक नये स्वरूप की पहचान कराता है। इसमें उद्धार का आशय परमेश्वर से तत्काल संपर्क करना है। पेंटिकुस्तवाद के पसंदीदा शब्द है – "अनुभव", "सामर्थ", और "परमानंद" और ऐसे अन्य। यह आत्मा का बपतिस्मा है, यही पेंटिकुस्तवाद की सभाओं की प्रकृति है, यही धार्मिक व्यक्तियों से उनकी अपील है, और इसी कारण आंदोलन में स्त्रियों की अग्रणी भूमिका (या स्थान) है।

पेंटिकुस्तवाद एक रहस्यवाद है, वास्तव में रहस्यवाद में उन्माद है, और यह पेंटिकुस्तवाद के संसाधनों से स्पष्ट रूप में समझाया गया है। द फुल गॉस्पल बिजनेस मैन व्हाइस (एक पेंटिकॉस्टल पत्रिका जून 1960) में एक सेवक द्वारा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने का वर्णन दिया गया है जो "सामर्थ के अभाव" से विचलित था और आग से बपतिस्मे की खोज में था :

> *मेरे हाथों में प्रत्यक्ष अजीव सा अनुभव हुआ, और वह मेरी बांह के मध्य में पहुंची और उसका प्रवाह होने लगा। वह ऐसा था मानो हजार, या फिर दस हजार, और जैसे एक लाख बोल्ट की बिजली मुझमें दौड़ रही थी। उसने मेरे हाथों को झकझोरना और खींचना आरंभ कर दिया। मैं सुन रहा था*

जैसे उस बिजली के प्रवाह की गूंज और जोर की आवाज आ रही थी। मैंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिये और वे ऐसे थे मानों परमेश्वर ने उन्हें थाम लिया है। मेरे मन के भीतर एक आवाज आयी इन हाथों को बीमारों पर रखना, मैं उन्हें चंगा करूंगा। परंतु मेरा बपतिस्मा नहीं हुआ था––––––उस वातानुकूलित कमरे में दोनों हाथ ऊपर उठाये––––––मेरा हृदय मेरे परमेश्वर के लिये खिंच रहा था, और तब उसके प्रेम का गरम, पिघले लावा जैसा प्रवाह मुझ तक आया। वह मुझ में स्वर्ग से आयी जलधारा के समान उण्डेल दिया गया और मुझे लगा, मैं अपने आपसे ऊपर उठ गया। मैं एक ऐसी भाषा में बोलने लगा, लगभग दो घण्टे तक जिसे मैं समझता नहीं था। मेरी देह पसीने से ऐसी भींग गई मानों मैंने बाष्प स्नान किया हो। आग का बपतिस्मा! (फ्रेडरिक डेल ब्रूनर की पुस्तक एक थ्योलॉजी आफ द होली स्पिरिट के पृष्ठ 127)

निश्चय ही यह वर्णन जेकब बोहमी को हैरान कर देता जो स्वयं एक रहस्यवादी थे।

जॉन शेरिल, एक प्रमुख पेंटिकुस्तवादी लिखते हैं कि उन्होंने अपने अस्पताल के कमरे में यीशु को एक जगमगाते श्वेत वस्त्र में देखा (उनकी पुस्तक दे स्पीक विथ अदर टंग्स)। डॉनल्ड गी, एक अन्य पेंटिकुस्तवादी पेंटिकुस्त के बपतिस्में का वर्णन इस प्रकार करते हैं– "हम परमेश्वर में पहुंचाये जाते हैं, और आत्मा एक ऐसी अभिलाषा से प्रज्वलित होती है कि हम सदा सदा के लिये परमेश्वर में संपूर्ण रूप में खो जाये।" यह रहस्यवाद की परिचित भाषा है (एक न्यू डिस्कवरी पृष्ठ 23)।

पेंटिकुस्तवाद की एक दुसरी मूलभूत त्रुटि उनका पवित्र आत्मा को केंद्रीय स्थान देना है, यदि वे मसीह को पूरी तरह मंच से नहीं उतारते तब भी उसे दर किनार अवश्य कर देते हैं। वे जोर देकर इसका खण्डन करते हैं, जैसे रोम जोर देकर खण्डन करता है कि मरियम का संप्रदाय यीशु के स्थान पर मरियम को बैठाता है। पंरतु तथ्यको झुठलाया नहीं जा सकता। इस आरोप का सत्य स्वाभाविक रूप में इस आंदोलन के मुख पर है। पेंटिकुस्तवाद में पवित्र आत्मा पर अधिक ध्यान दिया जाता है। पुत्र के कार्यों को नहीं बल्कि आत्मा के कार्यों का अनुभव और महिमा मण्डन किया जाता है। यह आंदोलन जिस नाम से स्वयं को पहचानता है, पेंटिकुस्तवाद वह नाम स्वयं पवित्र आत्मा से संबंधित है, और उसके लिये मार्ग बनाता है। जबकि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के लोगों की पहचान बतौर मसीही करता है और यह नाम पुत्र अर्थात यीशु से संबंध रखता है।

पवित्र आत्मा का पक्ष लेना और यीशु की उपेक्षा (निंदा) करना पेंटिकुस्तवाद की धर्मशिक्षा में गहरे जड़ें जमा चुका मूल भाव है। पेंटिकुस्तवाद की शिक्षा है कि परमेश्वर की संतान को यीशु से भी उच्चतर आत्मा के स्तर में जाना चाहिये, और केवल विश्वास से मसीह को ग्रहण करने से आगे बढ़कर पवित्र आत्मा के बपतिस्में में पवित्र आत्मा को पाना चाहिये।

पेंटिकुस्तवाद मसीह का अनादर करता है।

जब भी कोई आत्मा मसीह के स्थान पर रखा जाता है, मसीह की उपेक्षा (निंदा) की जाती है या फिर उसे मसीह से बढ़कर सम्मान दिया जाता है, तब वह मसीह का आत्मा नहीं है। परंतु ख्रीष्टविरोधी की आत्माओं में से एक है, क्योंकि मसीह का आत्मा *मसीह को प्रकट करता है, मसीह को देता है, मसीह के कामों पर ध्यान आकर्षित करता और मसीह की महिमा करता है* – ''जब वह सहायक आयेगा जिसे मैं पिता की ओर

से तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी साक्षी देगा'' (यूहन्ना 15:26) ''वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों को लेकर तुम पर प्रकट करेगा'' (यूहन्ना 16:14)।

पेंटिकुस्वाद की तीसरी त्रुटि विश्वास को कमतर बनाना है। बाइबिल की साक्षी कि मसीह में किसी और बात का महत्व नहीं है ''केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा होता है'' (गलातियों 5:6), पेंटिकुस्तवाद ऊंचा उड़कर कहता है कि मसीह पर विश्वास पर्याप्त नहीं है, यह पर्याप्त के आसपास भी नहीं है– कुछ अतिरिक्त आवश्यक है, जिसका बहुत अधिक महत्व है और वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है। पवित्रशास्त्र में विश्वासियों की अनुग्रहमय प्रशंसा की अनदेखी करके कि वे जो भ्रमित (हैरान) नहीं होंगे और जो चुना हुआ वंश, राजकीय याजकों का समाज, पवित्र जाति और परमेश्वर के निज लोग होंगे (1पतरस 2:9), पेंटिकुस्तवाद "केवल" विश्वास करने वालों को हल्का समझता है और उन्हें ऊंचा उठाता है जो पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाये है। विश्वास को तुच्छ ठहराने पर सभी प्रकार के मानवीय कार्यों को महत्व मिलता है। पेंटिकुस्तवाद उन बातों को लाभांश देता है जो कथित तौर पर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने की शर्तें है, अर्थात सघन प्रार्थना करना, अपने हृदय को सभी पापों से शुद्ध करना, और संपूर्ण रीति से समर्पण करना, और ऐसी अन्य बातें, इनमें सबसे अधिक मूल्यवान है, अन्य अन्य भाषाओं में बोलने का मानवीय कार्य। परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करने का स्थान इसके बाद का है।

इसमें आश्चर्य नहीं कि व्यवहारिक रूप में पेंटिकुस्तवाद परमेश्वर की संतान को उद्धार में मिलने वाली एक मूलभूत आशीष की उपेक्षा (अनदेखी) करता है, यह आशीष जो विश्वास के द्वारा मिलती है– पापों की क्षमा। सुसमाचार में धन्य है वे जिनके अपराध क्षमा हुये और जिनके पाप ढांके गये (रोमियों 4:7, भजन संहिता 32:1) के स्थान पर पेंटिकुस्तवाद की उद्घोषणा है, "धन्य है वे जो पवित्र आत्मा के बपतिस्में की सामर्थ और परमानंद का आनंद लेते हैं"।

विश्वास को कमतर बनाने वाला, विश्वास में कुछ जोड़ने वाला, और विश्वास से आगे चलने वाला शैतान की ओर से है और एक दूसरा सुसमाचार है, और जो भी इस विधर्म में पड़कर गिर जाता है वह अनुग्रह से गिर जाता है। गलातियों 5 की आरंभिक पदें स्पष्ट और पैनी चेतावनी देती है कि विश्वास के अतिरिक्त, और विश्वास से बढ़कर अन्य किसी बात का महत्व नहीं है। उद्धार की प्राप्ति के लिये विश्वास में कुछ भी जोड़ने का अर्थ मसीह को खो देना है : इस प्रकरण में "मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा" (पद 2) "तुम अनुग्रह से वंचित हो गये हो" (पद 4)।

Sola Fide! केवल विश्वास! समस्त उद्धार केवल विश्वास के द्वारा है! "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है––––कार्यों के कारण नहीं, जिससे कि कोई घमंड करे" (इफिसियों 2:8–9)। हमारे उद्धार का आरंभ, निरंतरता, और सिद्धता (परिपूर्णता) केवल विश्वास के कारण है।

पेंटिकुस्तवाद गर्वीला है, वह अतीत की कलीसिया के प्रति अपने दृष्टिकोण में हठीला है। 1900 ईस्वी से पहले कलीसिया में पवित्र आत्मा के बपतिस्में जैसी कोई पेंटिकुस्तवादी बात नहीं थी। अथेनासियुस और अगस्टीन को यह नहीं मिला था। लूथर और कैल्विन ने इसे नहीं पाया। नीदरलैण्ड के सुधारवादी पवित्रजनों ने जो हजारों लाखों में रोमन कैथोलिक सताव (16वीं शताब्दी में) के दौरान घात किये गये, उन्हें यह नहीं मिला था। इसके विपरीत, उन्होंने खुलकर इसका खंडण किया था। अगस्टीन अतीत की कलीसिया की सोच को अभिव्यक्ति देता है:

> आरंभ के दिनों में पवित्र आत्मा विश्वास करने वालों पर उतरा और उन्होंने अन्य अन्य भाषाएं बोली, जिन्हें उन्होंने सीखा नहीं था : ''जैसे आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी''। ये चिंन्ह समय के अनुसार थे। उचित था कि पवित्र आत्मा के विषय में सभी भाषाओं में संकेत दिया जाये, और दर्शाया जाये कि परमेश्वर का सुसमाचार समस्त पृथ्वी पर सभी भाषाओं में फैलाया जायेगा। यह कार्य संकेत देने (परिचय देने) के लिये था और उसका समय बीत चुका है। (*टेन होमिलीज ऑन द फर्स्ट इपिस्टल ऑफ जॉन– द नाइसीन एण्ड पोस्ट नाइसीन फादर्स खण्ड VII*)।

पेंटिकुस्तवादी इस बारे में क्या कहते हैं? ''अब तक कलीसिया एक अति निर्बल और जीवन रहित कलीसिया थी। संपूर्ण सुसमाचार, संपूर्ण उद्धार और संपूर्ण मसीही जीवन का आरंभ हमसे हुआ है।''

पेंटिकुस्तवाद और नव पेंटिकुस्तवाद की विचारधारा को एक स्थान में संग्रहित करें, तब भी वे मिलकर एक लूथर, एक कैल्विन या फिर एक सुधारवादी संत की जूती के बंधन खोलने के योग्य नहीं है जो पवित्रशास्त्र के सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, अपनी धार्मिकता के लिये मसीह पर भरोसा करते हैं, प्रभु का भय मानते और उसकी आज्ञाओं को पालन करते हैं, परिवार का लालन–पालन सत्य में करते, और परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से करते हैं।

"केवल" विश्वास करने वालों के प्रति पेंटिकुस्तवाद का दृष्टिकोण हठपूर्ण है। कलीसिया में पेंटिकुस्तवादी अभिजात्य है, सर्वोत्तम संत है, और अन्य सभी "मात्र" हृदय परिवर्तन करने वाले मसीही है। यह हठधर्मिता पेंटिकुस्तवादियों का व्यक्तिगत पाप ही नहीं है वरन् पेंटिकुस्तवादियों की धर्मशिक्षा है। पेंटिकुस्तवाद कलीसिया में दो बपतिस्मों की शिक्षा देता है – पापों की क्षमा का कमतर बपतिस्मा (जिसका चिन्ह जल है) और पवित्र आत्मा का उच्चतम बपतिस्मा (जिसका आरंभिक चिंन्ह अन्य अन्य भाषा है) सभी मसीहियों को पहला बपतिस्मा मिलता है, परंतु कुछेक लोग दूसरे बपतिस्मे को प्राप्त करते हैं – वे सर्वोत्तम संत है। यह मूलभूत धर्मशिक्षा है, इस कारण पेंटिकुस्तवाद विभाजनकारी संप्रदाय है। वह आत्मा की एकता को मेल के बंधन में बनाकर रखने का प्रयास नहीं करता जैसा मसीह के प्रेरित ने इफिसियो 4:3 में आग्रह किया है, परंतु उसे तोड़ता है। इफिसियों 4 की पद 5 के अनुसार, मण्डली में एकता 'एक बपतिस्में' के मूल में हैं। दो बपतिस्मों की वकालत करना, दो विश्वास या दो प्रभु या दो ईश्वर जैसा एकता का विघटन करने वाला है। आत्मिक घमण्ड का प्रत्येक स्वरूप विभाजनकारी है, विनम्रता ही एकता का पोषण करती है। प्राचीन अपने आपको धोखा देते हैं जब वे मण्डली में पेंटिकुस्तवाद को सहन करते हैं, इसके बजाए बेहतर होगा कि शांति (मेल) बनाकर रखने के लिये उसके विरुद्ध चेतावनी दे।

इस घमंड की व्याख्या यह है कि पेंटिकुस्तवाद मनुष्यों का बनाया धर्म है। यह मनुष्यों की भावनाओं और मनुष्यों द्वारा सामर्थ धारण करने पर केंद्रित है। यह मनुष्यों को उन कामों को करने का निर्णायक कर्तव्य प्रदान करता है जो पवित्र आत्मा के बपतिस्में में उद्धार को सिद्ध करने के लिये आवश्यक शर्तें है। यह व्यक्तियों को बाइबिल के अतिरिक्त और भी प्रकाशन प्राप्त करने और उनसे मण्डली को बांधने की अनुमति देता है। यह व्यक्ति को कलीसिया या सहभागिता या मण्डली पर संप्रभु प्रधानता करने के लिये बल देता है ताकि वह अपनी इच्छा से लोगों के जीवन को नियमित (या नियंत्रित) करे। पेंटिकुस्तवादी जिस आत्मा का सम्मान करते हैं, वह आत्मा वह नहीं जो मसीह की महिमा करता है (यूहन्ना 16:14), मसीह के द्वारा दिये छुटकारे को प्रयोग में लाता है (हाइडलबर्ग कैटेकिज्म ए–53, "वह (अर्थात पवित्रात्मा) भी मुझे दिया गया है ताकि मैं.... मसीह और उसके सभी लाभें में भागीदारी करू"); वह समस्त सत्य में मेरी अगुवाई करता है जिसे मसीह ने प्रेरणा से रचित पवित्र शास्त्र में कहा है (यूहन्ना 16:13), और विश्वास के द्वारा मसीह के सब

लोगों को प्राप्त होता है (गलातियों 3:14)। यह वह आत्मा है जो मसीह की महिमा करता है, परंतु पेंटिकुस्तवाद का आत्मा अपनी ओर ध्यान आकर्षित करता है, उद्धार के अपने लाभें को बांटता है, अपनी बात (अपने बारे में) कहता है, और विश्वास से सुनने के सत्य से बाहर (अलग हो) कार्य करता है। यह आत्मा मनुष्य की सेवा करता है।

पेंटिकुस्तवाद परमेश्वर पर केंद्रित नहीं है। यही कारण है कि वह परमेश्वर के वचन पर आक्रमण कर सकता है (पवित्रशास्त्र पर) और परमेश्वर के उद्धारकर्ता (मसीह) की उपेक्षा कर सकता है, उद्धार के लिये परमेश्वर के मार्ग (साधन) विश्वास को कमतर ठहरा सकता है, और उद्धार में परमेश्वर की मूलभूत आशीष (धर्मी ठहराया जाना) की अनदेखी कर सकता है। मूल रूप में यह सुसमाचार मनुष्यों के अनुसार है (गलातियां 1:11) और ऐसी त्रुटि है जिसकी बहुधा अनदेखी की जाती है, यहां तक कि पेंटिकुस्तवाद की आलोचना में भी यही पेंटिकुस्तवाद का लक्षण है, वह चाहे जहां भी पाया जाये। यह स्वतंत्र इच्छा की भूल है, अर्थात उद्धार की धर्मशिक्षा जो परमेश्वर की संप्रभु और अनुग्रहमय इच्छा पर नहीं परंतु पापी मनुष्य की इच्छा पर निर्भर है (रोमियों 9:16)। पेंटिकुस्तवाद की जड़ें कैल्विन, डॉर्ट और वेस्टमिनस्टर में नहीं परंतु अरमीनियुस, वेसली, फिन्नी और आत्मिक जागृतिवाद में है।

यह पेंटिकुस्तवाद की लोकप्रियता और मिलनसारिता दोनों की व्याख्या करता है। पेंटिकुस्तवाद मिलनसार है। यह स्वाभाविक रूप में माननीय और आक्रामक रूप में मिलनसार है। यह सभी कलीसियाओं में कार्य करता है और उनके (अंगीकार) विश्वास एवं धर्मशिक्षा के मतभेदों की परवाह नहीं करता। यह रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टैन्ट दोनों को जोड़ता है। पेंटिकुस्तवाद में सब एक है, वे जो सामूहिक रूप में मूर्तिपूजक हैं, और वे जो मूर्तिपूजा को शापित मानते हैं; वे जो धार्मिकता के लिये अपने गुणों पर निर्भर करते हैं; और वे भी जो अंगीकार करते हैं कि वे केवल मसीह की अलौकिक धार्मिकता पर भरोसा करते हैं; वे जो अपनी स्वतंत्र इच्छा से उद्धार पाने की बात करते हैं; और साथ ही वे भी जिनका अंगीकार है कि *स्वतंत्र इच्छा* का सुसमाचार एक प्लाजियस त्रुटि है जिसका प्रादुर्भाव नरक से है। धर्मशिक्षा से मतभेद रखने वाली अपनी आत्मा से लज्जित होने के स्थान पर वे आत्मा के प्रति उत्तेजित होते है और सत्य के प्रति अवज्ञाकारी है। पेंटिकुस्तवादी अपने धर्म को कलीसियाई एकता का साधन मानते हैं। पेंटिकुस्तवादियों की मिलनसारिता की प्रकृति का प्रकट उदाहरण "कैन्सास नगर में 1977 में संपन्न मसीही कलीसियाओं में करिश्माई नवीनीकरण" का सम्मेलन था। उस सम्मेलन को बैप्टिस्ट, पेंटिकॉस्टल, इपिस्कोपलियन, लूथरन, मेनोनाइट्स, मसीयानिक यहूदियों, प्रेसबीटीरियन, रोमन–कैथोलिक, और संयुक्त मेथोडिस्ट के द्वारा प्रायोजित किया गया था, जिसमें बहुत सी अन्य कलीसियाओं के सदस्यों ने भी भाग लिया था।

मुख्य वक्ताओं में से एक इपिस्कोपियन डेनिस बेनेट ने कहा ''मैं देखता हूं कि मसीहत की 3 जलधाराएं एक साथ बहना आंरभ कर रही है–कैथोलिक धारा जिसमें उसके इतिहास और लगातार चलने वाले विश्वास पर जोर दिया गया है, सुसमाचारकीय धारा जिसमें पवित्रशास्त्र के प्रति निष्ठा पर और मसीह के लिये व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया है और पेंटिकुस्तवाद की धारा जिसमें पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा परमेश्वर के त्वरित अनुभव पर जोर दिया गया है।''

प्रमुखवक्ता, रोमन कैथोलिक, केविन रानागन ने कहा, ''विभिन्न मसीही कलीसियाओं के बीच विभाजन संसार में गंभीर रूप में विक्षुब्धकारी है। संसार का विश्वास करना हमारे एक होने पर निर्भर है, उसने कहा ''यह परमेश्वर की इच्छा है'' उसने जोर दिया, कि "हम एक बने।'' उसने अपना विश्वास अभिव्यक्त किया

कि ''मसीही एकता के दीर्घकालीन स्वरूप को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ना एक वास्तविक संभावना है'' (क्रिश्चियानिटी टुडे, अगस्त 12, 1977, पृष्ठ 36–37)।

परमेश्वर के वचन, मसीह, और विश्वास में मूलभूत त्रुटि, और उनके गर्व के कारण – क्योंकि उनकी एकता (मिलनसारिता) दोषपूर्ण है– सत्य से अलग एक एकता बनती है, उद्धार की विधार्मिक धर्मशिक्षा, पवित्र आत्मा के बपतिस्में की शिक्षा, और धोखेबाजी से युक्त आश्चर्यकर्मों के कारण अवश्य है कि पेंटिकुस्तवाद को अस्वीकृत किया जाये। अवश्य है कि मसीही अनुशासन में इसे अस्वीकार किया जाये। यहां कुछ लोग निर्बल है, वे पेंटिकुस्तवाद की त्रुटियों को जानते हैं, वे सुधारवाद के विश्वास से उसका मूलरूप में अंतर समझते हैं, वे आंदोलन की आलोचना भी करते हैं, परंतु साथ ही साथ वे अपने "पेंटिकुस्तवादी भाइयों और बहनों" का उल्लेख भी करते है और अपनी कलीसियाओं में पेंटिकुस्तवाद को सहन भी करते हैं।

पेंटिकुस्तवादी को अनुशासित किया जाना अवश्य है। उसके अपने लाभ के लिये यह होना चाहिये, ताकि परमेश्वर उन्हें पश्चाताप की भावना दे और वे सत्य को मान्य करे। उन्हें कलीसिया की भलाई के लिए अनुशासित करना अवश्य है। ताकि अन्यसदस्यगण भय मानना सीखें और पेंटिकुस्तवाद का खमीर कलीसिया में न फैले। यदि पेंटिकुस्तवाद कलीसिया में रह जाता और अपने धर्म को स्थायित्व देता है, "भला होता कि जो तुम्हें विचलित कर रहे हैं वे स्वयं अपना ही अंग काट डालते" (गलातियों 5:12)। "विधर्मी मनुष्य को पहली व दूसरी चेतावनी देकर उससे अलग हो जा, और यह जान ले कि ऐसा मुनष्य पथभ्रष्ट हो गया है। वह अपने आपको दोषी ठहराकर पाप करता जाता है" (तीतुस 3:10–11)।

अध्याय–3

मसीही जीवन के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण

क्या पेंटिकुस्तवाद में गंभीर त्रुटियों के बावजूद सुधारवादी कलीसियाओं में योगदान करने के लिये कुछ है, कुछ ऐसा जिसकी इन कलीसियाओं में वास्तव में आवश्यकता है? क्या सुधारवादी विश्वासियों को पेंटिकुस्तवादियों से कुछ सीखना नहीं चाहिये, ऐसा कुछ जिसके विषय में वे अंजान हैं? क्या सुधारवादी कलीसियाओं और उनके सदस्यों में कुछ कमी नहीं है जिसे परमेश्वर आज पेंटिकुस्तवाद या करिश्माई आंदोलन के द्वारा पूरा कर रहे हैं? कलीसिया को पहली वर्षा भरपूरी से देने के बाद क्या परमेश्वर अब पिछली वर्षा की योएल नबी की भविष्यद्वाणी को पूरा नहीं कर रहे हैं (योएल 2:23)?

यह विचार सुधारवादियों में अधिकाई से ग्रहण किया जाता है। पेंटिकुस्तवाद से आशा की जाती है कि वे कलीसिया और उसके सदस्यों में गर्मजोश मसीही जीवन का संचार करने में योगदान दे। कहा जाता है कि सुधारवादी कलीसिया और सुधारवादी संतों के पास ठोस धर्मशिक्षा है, परंतु मसीही जीवन के क्षेत्र में उनमें कमी है। कलीसिया या मण्डली के लिये पेंटिकुस्तवाद सदस्यों के बीच वास्तविक एकता, परवाह करने वाले प्रेम, और अन्य सदस्यों के साथ साझीदारी, और सभी सदस्यों के लिये दान वरदानों का ऊर्जायुक्त उपयोग, एक स्वतः स्फूर्त जीवन्त और गर्मजोश आराधना इत्यादि में योगदान कर सकता है। सदस्यों को व्यक्तिगत रूप में यह आत्मिक अनुभव, आनंद, जोश (धुन) और बल (सामर्थ) की आपूर्ति करेगा। सुधारवादी मसीहत के पास वचन (धर्मशिक्षा) है और पेंटिकुस्तवाद उसमें पवित्र आत्मा का योग करेगा। इस प्रकार पेंटिकुस्तवाद का सुधारवादी कलीसिया में परिचय कराया जाता है और उसका स्वीकार किया जाता है।

यह विचार झुठा है। सुधारवादी कलीसिया ने सदैव परमेश्वर के लोगों के बीच एकता का प्रयत्न किया है, सदस्यों से परस्पर प्रेम का आग्रह किया है और प्रत्येक सदस्य को उसके दान वरदानों के सही उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया है यह पेंटिकुस्तवाद नहीं है जिसने संतों के आपसी मेल और संचार (जुड़ाव) को सुधारवादी कलीसियाओं में आगे बढ़ाया है। उसके हाइडेलबर्ग कैटेकिज्म के प्रश्न 55 में ये शब्द है–

प्रथम, विश्वास करने वाले सभी और प्रत्येक, जो मसीह के अंग (सदस्य) है, वे आमतौर पर मसीह और उसके संपूर्ण धन और दान वरदानों के भागीदार है; दूसरा, प्रत्येक व्यक्ति को यह जानना चाहिये कि यह उसका कर्तव्य है कि अपने दान वरदानों को अन्य सदस्यों के लाभ और उद्धार के लिये तत्परता और आनंद से काम में लाये।

सुधारवादी कलीसिया में उसके सदस्यों को जैसा वे प्रभु के दिन करते हैं, अपने पड़ोसी से प्रेम करने के द्वारा मसीही जीवन जीने के लिये प्रोत्साहित और आवेशित करने के लिये पेंटिकुस्तवाद वजह नहीं है (उसी कैटेकिज्म में 39–44)। भला होता कि यदि संभव हो कि पेंटिकुस्तवादी सुधारवादी विश्वास के आधार पर विश्वासी को दी गई पांचवी आज्ञा का लागूकरण कर उन्नति करें जैसे कि मांग है ''मैं अपनी माता और पिता, और अधिकारियों के प्रति संपूर्ण सम्मान, प्रेम और विश्वासयोग्यता दर्शाता हूं..... और धीरज धरकर उनकी निर्बलताएं और दुर्बलताएं सहन करता हूं.....'' (प्रश्न 104); छंटवी आज्ञा के संदर्भ में जैसी मांग है, ''हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने..... और उसके प्रति धीरज, मेल, नम्रता, दीनता, दया, और सभी प्रकार की दयालुता, और उसे चोट खाने से बचाना जैसा हम अपने लिये चाहते हैं'' (प्रश्न 107); सातवीं आज्ञा के विषय में जैसी शिक्षा है कि ''पवित्र विवाह या अविवाहित होने की दशा में हमें पवित्रतापूर्वक और संयमशीलता के साथ रहना चाहिये'' (प्र. 108); आठवी आज्ञा के संबंध में जैसी मांग है, ''मैं अपने पड़ोसी का लाभ हर स्थिति में चाहता हूं, मैं उसके साथ वैसा ही व्यवहार करूंगा, जैसा व्यवहार मैं स्वयं अपने लिये दूसरों से चाहता हूं'' (प्र. 111); और नौंवी आज्ञा के विषय में जैसी मांग है कि ''मैं जहां तक सक्षम हूं, अपने पड़ोसी के सम्मान और उत्तम चरित्र की अभिरक्षा और उसे सम्मान दिलानें का कार्य करता हूं'' (प्र. 112)।

पेंटिकुस्तवादियों का यह सुझाव कि हमें मसीही अनुभव के बारे में सीखने के लिये पेंटिकुस्तवाद के चरणों में बैठना होगा, उसके उत्तर में सुधारवादी मसीही जन उस प्रत्युत्तर को देना पसंद करेंगे जो प्रभु ने बवण्डर में से अय्यूब को दिया – "यह कौन है जो परामर्श पर नासमझी की बातों के द्वारा परदा डालता है? जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली तब तू कहां था?" (अय्यूब 38:2, 4)। सुधारवादियों, प्रेसबीटीरियन और प्यूरिटन प्रचारकों और लेखकों की गौरवमयी परम्परा को दर किनार करके जो घृष्टतापूर्ण सुझाव देते हैं उन्हें हम हायडलबर्ग कैटेकिज्म पढ़ने के लिये आमंत्रित करते हैं। लगभग 400 वर्ष पहले से सुधारवादी मसीहियों को कैटेकिज्म सिखाया जाता है जो पवित्रशास्त्र का संपूर्ण संदेश उन्हें व्यक्तिगत सुविधा के दृष्टिकोण से बताया जाता है, और यह परिभाषित करता है कि यह व्यक्तिगत सुविधा मसीह के साथ उनके निजी संबंध है, और यह उस आधार को बनाता है कि यह व्यक्तिगत सुविधा, पाप, छुटकारे का ज्ञान और धन्यवाद की भावना का अनुभवजन्य ज्ञान है। जब वे कैटेकिज्म का अध्ययन समाप्त करते हैं – वे कैनन्स ऑफ डॉर्ट आरंभ कर सकते हैं ताकि उन महान धर्मशिक्षाओं की गर्माहट और पासबानीयुक्त आचरण समझ सके, जो सुधारवादी विश्वास और परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की मूल भावनाओं के विशेष सत्य है। यहां वे पहले से ठहराए जाने के सिद्धांत (रोमियो 8:29) की समझ प्राप्त करते हैं – जिसका गहराई से संबंध चुन लिए जाने की निश्चयता से है (1:12); जिसमें चुने जाने का संज्ञान परमेश्वर की संतानों के प्रतिदिन के जीवन की

दीनता, आराधना, आत्मशुद्धि और धन्यवादी प्रेम के प्रभाव भी है (1:13); और उनके आत्मिक संघर्ष और संदेह भी है, जो "धुंआ देती बत्ती" और "कुचले हुए नरकट" के समान है (1:16)।

एक सही बाइबिल सम्मत मसीहत के रूप में सुधारवादी विश्वास ने सदैव पवित्र आत्मा और उसके कार्यों का सम्मान किया है। परमेश्वरत्व में उसके स्थान का अंगिकार किया है; और यह भी कि पेंटिकुस्त के दिन मसीह के आत्मा के रूप में उसे उण्डेला गया; कलीसिया को एकत्रित करने का संपूर्ण कार्य, और प्रत्येक चुने हुऐ का उद्धार करना उसी का कार्य है; यहां तक कि इस बात से इंकार किया जाता है कि कलीसिया को एकत्रित करने और पापियों के उद्धार का लेशमात्र कार्य भी मनुष्य का है; और यह भी स्वीकार किया जाता है कि वचन भी पवित्र आत्मा के बिना सामर्थहीन है। सुधारवाद आत्मा के कामों को ऊंचा उठाता है, यथा, नया जन्म और पवित्रीकरण, उसके दान वरदानों की प्रशंसा करता है, यथा सत्य की विश्वासयोग्य साक्षी, और आत्मा के फल का संवर्धन भी प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, नम्रता और संयम (गलातियो 5:22)। इन सब बातों के विषय में सुधारवादी कलीसिया पेंटिकुस्तवाद की लेशमात्र भी कर्जदार नहीं है।

सुधारवादी मसीही यीशु मसीह के साथ (समकक्ष) किसी भी आत्मा का सम्मान करने से इंकार करते हैं, वे मसीह के छुटकारे के काम के अतिरिक्त अन्य किसी भी उद्धार पर विचार करने से इंकार करते हैं, वे मसीही के वचन के सुदृढ़ वातावरण अर्थात पवित्रशास्त्र से बाहर निकल किसी भी आत्मा के साथ उड़ने से इंकार करते हैं, और मसीह की आत्मा छोड़ किसी आत्मा का अंगीकार करने से इंकार करते हैं। परंतु परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमारी बात का बुरा नहीं मानता कि हम ऐसा इंकार करते हैं। वे स्वयं हम से यह मांग करते हैं, और हमारे भीतर कार्य करते हैं। क्योंकि वे मसीह को महिमान्वित करने आये है (यूहन्ना 16:14) और मसीह द्वारा दिये गये छुटकारे को उण्डेलने (यूहन्ना 7:37–39) और यीशु के वचनों के द्वारा कार्य करने (यूहन्ना 6:63) और यीशु मसीह का अंगीकार करने आये है (1 यूहन्ना 4:1–3)।

पेंटिकुस्तवाद के पास सुधारवादी कलीसियाओं में योगदान करने कुछ भी नहीं है। सुधारवादी विश्वासीजन उनसे कुछ भी नहीं सीख सकते। सुधारवादी कलीसियाओं की ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है जिसकी पेंटिकुस्तवादी आपूर्ति कर सकते हैं। अवश्य है कि पेंटिकुस्तवाद को उसके समग्र रूप में अस्वीकृत किया जाये, यह सुधारवादी मसीहत के लिये दूसरे ग्रह का धर्म है। सुधारवादी कलीसिया के रक्त संचार में यह एक विदेशी तत्व है, यदि बिना परिष्कार इसे रहने दिया जायेगा, यह उस देह अर्थात सुधारवादी कलीसिया के लिये मृत्यु लायेगा।

सुधारवादी विश्वासियों के घरों में उन्नतिकारक साहित्य के रूप में पेंटिकुस्तवादियों के साहित्य का पाया जाना विचलित करता है, जैसे वॉचमैन नी, डेविड विल्करसन, जॉन ऑस्टिन, आर्थर वॉलिस, *द फुल गॉस्पल बिजनेसमैन व्हाइस*, और अन्य। यद्यपि हो सकता है कि सामग्री पेंटिकॉस्टल न हो, और आराधना संबंधी पढ़ने और सुनने के लिये हो, फिर भी कुछ सुधारवादी विश्वासी गलती कर जायेंगे। मसीही जीवन जीने और आचरण के लिये और अपनी आत्मा की भूख–प्यास तृप्त करने के लिये वे नियमित रूप से जहां से भोजन प्राप्त करते हैं, वह वर्तमान समय के रूढ़िवादियों का सर्वाधिक विक्रय होने वाला सर्वोत्तम साहित्य है। अधिक से अधिक, वह सुधारवाद से रहित है, और निकृष्टतम रूप में वह उन सब को तुच्छ (कमतर) मानता है जो सुधारवादी विश्वासीजनों को प्रिय है। वह मसीही जीवन और अनुभव का एक सतही और असत्य दृष्टिकोण रखता है। उदाहरण के लिये एक औसत मसीही पुस्तक भंडार में जहां अधिक उच्चतर, अधिक प्रचुर, अधिक भरपूर, और अधिक गहरे, मसीही जीवन के लिये झागदार साहित्य (पुस्तकें) बड़ी संख्या में हैं

जिनके मुखपृष्ठ चमकदार (भड़कीले) है, क्या आपको "गहरे स्थानों से मैंने हे परमेश्वर (प्रभु) तुझे पुकारा (भजन 130)" जैसे विषय पर कुछ मिलेगा? उनके उच्चतर, प्रचुर, भरपूर, और अधिक गहरे, मसीही जीवन के केंद्र में स्थान रखने वाला पाप के दोष के कारण दुख (ग्लानि) और भी कमतर है। उनका उच्चतर, प्रचुर, भरपूर और अधिक गहरे मसीही जीवन के हृदय की धड़कन मसीह के क्रूस के कारण उद्धार में पापों की क्षमा नहीं है। इन पुस्तकों में पाठकों को बताया गया मसीही जीवन, पवित्र और अनुग्रहकारी न्यायी प्रभु जो पापियों को क्षमा करता है, उसका भय मानने का जीवन नहीं है–(भजन 130:4) इसके स्थान पर वे कहते है कि कैसे खुश रहें। और न ही वे मसीही जीवन को आज्ञापालन की कीमत चुकाकर आज्ञापालन, परमेश्वर की व्यवस्था की दस आज्ञाओं, पर आधारित करते हैं। इन पुस्तकों पर और उनके उच्चतर, प्रचुर, भरपूर,अधिक गहरे मसीह जीवन पर विनाश आये।

यह भी सत्य है कि ऐसे बुरे साहित्य के पठन पाठन का कुछ दोष हम प्रचारकों, प्राचीनों, माता–पिताओं और मसीही स्कूल शिक्षकों के सिर है। संभवतः हम अच्छे और भक्तिमय संतों के अच्छे और खरे लेखन और उपदेश, टीकाओं और अन्य साहित्य की संस्तुति नहीं करते जैसे कि लूथर, कैल्विन, और अन्य प्राचीन सुधारवादी, प्रेसबीटिरियन और प्यूरिटन लेखकगण।

संभव है कि हम ऐसी पुस्तकों और लेखों का लेखन नहीं कर रहे हैं जो सुधारवादी विश्वास के व्यवहारिक और अनुभवजन्य पहलुओं के साथ समुचित न्याय करे, उनके अद्वितीय और जीवित धर्म परायणता को प्रकट करे। संभवतः हम सुसमाचार प्रचार में इन पहलुओं को कम करके दर्शाते है। तब हम अपनी रूढ़िवादिता पर अमल किये बिना उसकी अभिरक्षा करते है, या फिर अनुभववाद की प्रतिक्रिया में हम अनुभव की अनदेखी करते हैं, व्यक्तिनिष्ठा की प्रतिक्रिया में हम व्यक्तिनिष्ठ बनने का साहस नहीं करते। और धर्मशिक्षा को तुच्छ जानने वाली व्यवहारिकता के प्रति प्रतिक्रिया में हम उन व्यवहारिक बातों के विषय में कहने में असफल रहते हैं जो ठोस धर्मशिक्षा बनती है (तीतुस 2:1)। इस विषय में अवश्य ही कमी है, सुधारवादी विश्वास में नहीं परंतु हमारे शिक्षण में और यद्यपि ये बातें गलत है, हमें आश्चर्यचकित न करें, कि पवित्रजन अपनी भूख–प्यास को कहीं और संतुष्ट करने की खोज करते हैं।

पेंटिकुस्तवाद में सुधारवादी विश्वासी को देने के लिये कुछ नही है, इस तथ्य का अभिप्राय यह नहीं है कि परमेश्वर अपने लोगों के हित में इस आंदोलन का उपयोग नहीं करता। परमेश्वर ने सदैव विधर्म का उपयोग अपनी कलीसिया को वचन की ओर लाने में किया है, ताकि उसका सत्य का ज्ञान बढ़े, और जीवन की विश्वास योग्यता में नवीनता आये। परमेश्वर पेंटिकुस्तवाद का उपयोग करके हमें वापस पवित्रशास्त्र के समीप लाता है ताकि हम मसीही जीवन से संबंधित उसकी शिक्षाओं की खोज करे।

पेंटिकुस्तवाद का मूल विचार मसीही जीवन की आलोचना और एक उच्चतर, प्रचुर, मसीही जीवन की प्रतिज्ञा है। पेंटिकुस्तवाद अत्याधिक ढीलापन, अविश्वासयोग्यता,सांसारिकता, और अनाज्ञाकारिता पाता है। अच्छा होगा यदि हम यह अंगीकार करे। परमेश्वर पेंटिकुस्तवाद के चाबुक को किसी कारण से भेजता है। बहुतों ने अपना प्रथम प्रेम खो दिया है। अन्य दूसरों का प्रेम ठंडा हो गया है, अधर्म बढ़ गया है, बहुतों के लिये आराधना एक जीवन रहित रीति रिवाज है, पापों का अंगीकार एक मृत परम्परा है, मसीही जीवन एक बाहरी विधि विधान है और उद्धार की शांति और आनंद के अनुभव का अस्तित्व नहीं है। कलीसिया के आत्मिक जीवन के पतन की पृष्ठभूमि में सदैव एक रहस्यवाद उठता है, विशेषकर मृत रूढ़िवाद और जीवित सांसारिकता। ऐसी परिस्थितियों में पेंटिकुस्तवाद लोगों को एक वास्तविक जीवन, क्रियात्मक सामर्थ, और अद्‌भुत अनुभव से प्रलोभित करता है।

पेंटिकुस्तवाद की जीवन की समीक्षा में जिसमें विश्वासयोग्य सुधारवादी विश्वासी जिसने पेंटिकुस्तवाद के पवित्र आत्मा के बपतिस्में को नहीं पाया है, और एक लापरवाह, अविश्वासयोग्य कलीसियाई सदस्य दोनों शामिल हैं, और एक मसीही व्यक्ति को आत्मिक जीवन और अनुभव के उच्चतर स्तर पर पहुंचाने की उनकी प्रतिज्ञा के संदर्भ में हम यह प्रश्न पूछने के लिये विवश है : "मसीही जीवन और अनुभव क्या है? एक सामान्य मसीही जीवन क्या है?"

इस प्रश्न के उत्तर में हम धार्मिक स्त्री–पुरुष के दावों पर ध्यान नहीं देते। मसीही जीवन और अनुभव का मानक पड़ोसियों की उसके नवीनतम पारलौकिक (परमानंद) अनुभव की साक्षी नहीं, परंतु पवित्र शास्त्र है। इस प्रकार हम कहते हैं, परमेश्वर सच्चा और प्रत्येक मनुष्य झूठा ठहरे। पवित्रशास्त्र अर्थात परमेश्वर के विश्वासयोग्य वचन को मसीही जीवन का मानक बनाने की असफलता और संपूर्ण रीति पर अविश्वसनीय मनुष्यों के शब्दों पर निर्भरता ही संदेहों का अंत न होने का कारण है, चाहे उस मनुष्य को आत्मिक बनने की आवश्यकता है या फिर वह परमेश्वर की नया जन्म प्राप्त संतान है। यही पेंटिकुस्तवाद को वह प्रवेशद्वार मिलता है जो उसे चाहिये। मसीही जीवन के ज्ञान का नियम यह है : ''व्यवस्था और साक्षी'' जो उन भूतसाधकों को रोको जो भावी विचारते और बुदबुदाते हैं (यशायाह 8:19–20)।

पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीही जीवन वह जीवन है जो यीशु मसीह में परिपूर्णता पाता है, उस मसीह में जो वचन में प्रकट किया गया है। वह कभी मसीह से आगे नहीं बढ़ेगा, उसमें मसीह के अतिरिक्त, या मसीह के साथ–साथ अन्य कुछ भी नहीं होगा – न खतना, न तो नए प्रकाशन, न उच्चतर ज्ञान और न कोई आत्मा। कारण यह है कि एक मसीही जानता है और उसने अनुभव से पाया है कि मसीह एक संपूर्ण उद्धारकर्ता है। क्योंकि मसीह में परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता सदेह वास करती है, और मसीह जन उसी में परिपूर्ण किया गया है, अर्थात उसी में भर दिया गया है (कुलु. 2:9–10)। निश्चय ही, मसीही जीवन उन्नति करने का जीवन है, परंतु यह उन्नति मसीह से अलग होकर नहीं परंतु मसीह में है : "अतः हम आगे को बालक न रहे..... सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाये" (इफिसियों 4:14–15)। जैसा शरीर की परिपक्वता की बढ़ती में होता है, यह आत्मिक उन्नति भी धीरे–धीरे अकसर अलक्ष्य विकास है न कि रातोंरात होने वाला स्वतः स्फूर्त रूपांतरण। यह जीवन भर चलता है। यह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा होता है।

यह पर्याप्त मसीह अपने समुचित लाभों के साथ, पवित्र आत्मा के उसके हृदय में निवास करने के कारण विश्वासी का जीवन है। विश्वासी कहता है "मैं अब जीवित न रहा, परंतु मसीह मुझमें जीवित है, और अब मैं जो शरीर में जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आपको दे दिया" (गलातियों 2:20)। परमेश्वर की कलीसिया के सभी सदस्यों के लिये प्रेरित की गर्मजोश प्रार्थना है कि विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में निवास करे (इफिसियो 3:17)। यह हममें से प्रत्येक में उसके आत्मा के द्वारा भीतरी मनुष्यत्व में बलवान होने के द्वारा संभव होता है (पद 16)।

मसीही जीवन मसीह के आत्मा में जीवन जीने का जीवन है जिसे हम सबने नये जन्म के समय पाया। विश्वासी को एक दूसरे बपतिस्में की खोज, कामना या प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसे आत्मा में चलने का प्रतिदिन प्रयत्न करना है, वह भी अपने पूरे जीवन भर। गलातियों 5 में मसीही जीवन के बारे में यही निर्देश दिया गया है। उन दिनों गलातियों की कलीसिया में मसीही जीवन के बारे में समस्यायें वरन गंभीर समस्याएं थी। वहां पवित्रजन एक दूसरे को मानो दांतों से काटते और चीरने–फाड़ने पर

आमादा थे – यह प्रेम के अभाव की शोचनीय दशा थी (पद *13–15*)। वहां शरीर और कामुकता की अन्य परीक्षाएं भी थी जैसे व्याभिचार, मूर्तिपूजा, पियक्कड़पन, और ऐसे अन्य (पद 19–21)। व्यर्थ गर्व करने और एक दूसरे को उसकाने और एक दूसरे से जलन रखने के प्रमाण भी मिलते हैं (पद 26)। ये समस्याएं उन स्त्री पुरुषों की थी जिनका बपतिस्मा हुआ था (गलातियो 3:27) और जिन्होंने पवित्र आत्मा पाया था (गलातियों 3:2)। परंतु हल इसमें नहीं था कि वे एक नया बपतिस्मा या पवित्र आत्मा का एक नया अभिषेक (प्रवाह) खोजे, इसके विपरीत हल यह था कि वे पवित्र आत्मा के अनुसार चले, जिसमें वे थे, "परंतु मैं कहता हूं कि पवित्र आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शारीरिक इच्छाओं को किसी रीति से पूर्ण न करोगे" (पद 16); "यदि हम पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित है तो पवित्र आत्मा के द्वारा चले भी" (पद 25)।

मसीही जीवन जिसका संकेत है वह सक्रिय (क्रियाशील) जीवन है। मसीही जीवन की गतिविधि सर्वप्रथम एक युद्ध है एक घमासान, न रूकने वाला और जीवन भर चलने वाला युद्ध। इस युद्ध की भूमि व्यक्ति स्वयं है, पाप शत्रु है–पेंटिकुस्तवाद इस युद्ध से अनजान (अनभिज्ञ) है, उन्होंने पवित्र आत्मा के बपतिस्में में पहले ही विजय श्री हासिल कर ली है। आप पेंटिकुस्तवाद में पापो की क्षमा के बारे में न केवल बहुत कम या बिलकुल भी नहीं सुनते है, परंतु आप पवित्रजनों के दैनिक जीवन में उनके भीतर निवास करने वाले पाप से उनके संघर्ष के बारे में भी बहुत कम या बिलकुल नहीं सुनेंगे। वास्तव में, करिश्माई प्रचारकों द्वारा अपने पाप के कारण आहें भरने और रोने वालों का उपहास करना सुना जा सकता है, ये वे हैं जिनके बारे में कहा जा सकता है कि उनके जीवनों की साक्षी यह है– "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियो 7:24)। इस बात को छोड़ अन्य कोई भी बात इतना स्पष्ट पर्दाफाश नहीं करती कि पेंटिकुस्तवाद सुधारवादी विश्वास के लिये अन्य किसी ग्रह का धर्म है। एक सुधारवादी पेंटिकुस्तवादी (Reformed Pentecostal) एक असंभव और परस्पर विपरीत (खण्डन करने वाली) बात है। एक पेंटिकुस्तवादी हायडेलबर्ग कैटेकिज्म के प्रथम भाग का अंगीकार नहीं कर सकता। अधिक से अधिक, वह कह सकता है कि वह पाप की दुर्दशा, उसकी दोष भावना और विकृति के विषय में जानता था। अपनी दुर्दशा से अनभिज्ञ, वह छुटकारे या पापों की क्षमा प्राप्त हृदय में प्रतिदिन उमड़ने वाली जीवित कृतज्ञता को जान सकता है।

पवित्रशास्त्र हालांकि मसीही जीवन को भीतर निवास करने वाले पाप के विरुद्ध संघर्ष के रूप में दर्शाता है। यही गलातियों 5:17 की शिक्षा है : ''क्योंकि शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है कि जो तुम करना चाहते हो उसे न कर सको।''

यही रोमियों 7 की शक्तिशाली धर्मशिक्षा है। मसीही पुरुष या स्त्री शारीरिक है और पाप के हाथ बिका हुआ है। स्वयं पौलुस भी परमेश्वर का जन और मसीह का प्रेरित शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ था। उसने अपने जीवन के अंतिम दिनों में, जबकि वह पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र किया गया और पवित्रीकरण में बहुत आगे बढ़ चुका था, स्वयं को ऐसा ही पाया (पद 14)। पौलुस शारीरिक था इसलिये नहीं कि उसने नया जन्म नहीं पाया था, इसलिये नहीं कि मसीह ने उसे पवित्र आत्मा और आग का बपतिस्मा नहीं दिया था, इसलिये नहीं कि पाप उसके जीवन पर प्रभुता करता था, और न इसलिये कि पौलुस एक लापरवाह मसीही था, परंतु इसलिये कि यद्यपि उसने नया जन्म पाया था, पाप उसमें उपस्थित था – उसमें पापमय और पूर्णतः विकृतियुक्त शरीर था (पद 21)। मसीह में एक नया व्यक्ति होने के कारण हम सोच सकते हैं कि महापवित्र संतों में एक संत, वह भीतरी मनुष्यत्व में परमेश्वर की व्यवस्था में आनंद करता था (पद 22), उसमें पाप के लिये घृणा थी (पद 15), और भला करने की इच्छा थी (पद 18), परंतु उसमें पाप की सामर्थ ऐसी थी कि जब तक वह जीवित रहा, ''जिस भलाई की मैं इच्छा करता हूं वह तो नहीं कर पाता, पंरतु

जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही करता रहता हूं'' (पद 19)। इस कारण प्रेरित और प्रत्येक मसीही, अपनी दुर्दशा को समझता है। वह अपने हृदय की वेदना में पुकारता है, 'मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं'' (पद 24) यह भजन 130 के आर्तनाद – "हे यहोवा मैं ने तुझे गहराईयों में से पुकारा है" – की नये नियम में गूंज है। फिर भी वह कभी इस आत्मिक युद्ध में हार नहीं मानता और न ही वह कभी अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह की शांति के बिना है। पद 23 युद्ध पर जोर देती है ("मुझे अपने अंगों में एक भिन्न व्यवस्था को बोध होता है, जो मेरे मन की व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करती रहती है....."); पद 24–25, मसीह की शांति के विषय में ("मुझे कौन छुड़ायेगा? हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो")।

मसीही जीवन की गतिविधि न केवल पाप के विरुद्ध यह युद्ध है, जैसा कि विश्वासी के व्यक्तिगत जीवन में है, परंतु यही गतिविधि परिवार और कलीसिया के मसीही जीवन में भी है।

यह पीड़ादायी और कटुता से भरा युद्ध है।

यही कारण है कि एक मसीही इस मधुर प्रतिज्ञा के झांसे में आ जाता है कि अचानक जीवन में यह युद्ध समाप्त हो गया है। एक पास्टर भी इसी प्रकार अपनी मण्डली के लिये ऐसी प्रतिज्ञा से परीक्षा में पड़ सकता है। परंतु पवित्र शास्त्र की ढाल से वह परीक्षा का प्रतिरोध कर सकता है और उसे करना भी चाहिये।

क्या आप अपने आपमें इस कड़वाहट भरे पाप के विरुद्ध युद्ध को पाते हैं?

निराश न हो!

मत सोचिये कि आपका उद्धार नहीं हुआ या आपका अपर्याप्त रूप में उद्धार हुआ है!

यही है– सामान्य मसीही जीवन!

परिणाम यह है कि हम प्रबल लालसा करते और प्रतीक्षा करते है, अनुग्रह के दूसरे कार्य की नहीं परंतु यीशु मसीह के द्वितीय आगमन की, ''हे प्रभु यीशु, आ, शीघ्र आ।'' "हम बड़ी उत्सुकता से आशा करते हैं, पवित्र आत्मा के बपतिस्में की नहीं परंतु हमारी देहों के पुनरुत्थान की, हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते है और अपने लेपालक पुत्र होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं" (रोमियो 8:23)।

दूसरा, मसीही जीवन की गतिविधि भले काम करने की है, परंतु इसका अभिप्राय बड़े–बड़े दर्शनीय और सम्मोहक कामों से नहीं है जैसा करिश्माई विश्वास करते हैं। परंतु ये कार्य छोटे छोटे और अमहत्वपूर्ण है जिन पर ध्यान नहीं जाता– वे कार्य जो मनुष्यों के लेखें में कुछ भी नहीं हैं। यह जीवन में पवित्रीकरण की गतिविधि है, शरीर के अनुसार नहीं, पर आत्मा के अनुसार आचरण है– इसमें व्याभिचार,कामुकता, अशुद्धता, अनैतिक यौन संबंध, मूर्तिपूजा, जादू टोने, घृणा, मतभेद, प्रतिस्पर्धा, रोष, झगड़े, विद्रोह, विधर्म, ईर्ष्या, हत्या, पियक्कड़पन, मौज–मस्ती और ऐसी अन्य बातों पर अमल करने का निषेध है (गलातियों 5:19–21); परंतु प्रेम, आनंद, मेल (शांति), धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, नम्रता, व संयम का जीवन है (गलातियों 5:22–23)।

यह गतिविधि परमेश्वर की व्यवस्था के उन कामों की है जो दिखाकर नहीं किये जाते–जैसे, परमेश्वर की सही रूप में आराधना, सत्य का अंगीकार, सब्त का स्मरण, माता–पिता की आज्ञा का पालन, विवाह में

विश्वास योग्यता, अविवाहित जीवन में पवित्रता (बेदाग), बच्चों को परमेश्वर के भय में पालना, पृथ्वी पर मिले रोजगार में यत्नपूर्वक परिश्रम, कैसर (प्रशासन) को कर देना, अपने पड़ोसी की बुराई न करना, विशेषकर वे जो मण्डली में भाई और बहन है, अपने भाग में संतोष करना और लालच न करना।

संक्षेप में, मसीही जीवन की गतिविधि प्रेम है– हमारे प्रभु परमेश्वर से प्रेम और अपने पड़ोसी से प्रेम!

जब आप ऐसा करें, अपने धर्म के कामों के लिये तुरही न बजवायें, गुप्त रूप में करें, ताकि परमेश्वर आपको प्रतिफल दे। ये सब बातें भीतर निवास करने वाली सर्वशक्तिमान की सामर्थ के द्वारा संभव है, परंतु तब भी पाप आपके सर्वोत्तम कामों में विकार उत्पन्न करेगा ताकि एक नयी आज्ञाकारिता का छोटा सा एक आरंभ हो, और क्षमा की लगातार आवश्यकता बनी रहे।

परंतु क्या मसीही जीवन के अपने अनुभव नहीं है?

विश्वास के विकल्प या विश्वास के साथ अनुभव का परित्याग किया जाना चाहिये, चाहे वह किसी भी रूप में हो। यीशु मसीह ने हमें अनुभव करने या महसूस करने की नहीं परंतु विश्वास करने की बुलाहट दी है। उद्धार का मार्ग अनुभव नही परंतु विश्वास करना है, हम अनुभव से नहीं पर विश्वास से उद्धार पाते हैं, हमें केवल विश्वास से उद्धार मिला है, उद्धार में विश्वास और अनुभव का योग नही है।

फिर भी विश्वास के अपने अनुभव हैं, इसके तीन पहलू हैं : परमेश्वर की संतान अपने पाप और दुर्दशा की अधिकाई को जानता है, वह मसीह में अनुग्रह के द्वारा छुटकारे को जानता है, और इस छुटकारे के लिये कृतज्ञता को जानता है।

क्या आपको यह अनुभव प्राप्त है? तब आपके पास सामान्य मसीही अनुभव है। यह सब उसमें है। जो भी इससे अधिक की लालसा करता है वह कृतघ्न है और परमेश्वर को क्रोधित करता है। वह परमेश्वर से मांग करता है जो अपने विषय में ज्ञान को अपने निज पुत्र में देता है (यूहन्ना 17:3), "परंतु क्या इससे अधिक कुछ और है, कुछ इससे बेहतर?"

कुछ अलग शब्दों में कहे तो, विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा वह शांति और आनंद प्रदान करता है जो धर्मी ठहराये जाने से मिलता है। ''इसलिये विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर परमेश्वर से हमारा मेल अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा है––––– और परमेश्वर की महिमा की आशा में हम आनंदित होते है'' (रोमियों 5:1–2)।

अब, क्योंकि यह मसीही जीवन है, सुधारवादी विश्वासीजन अंगीकार करता है कि यह तत्व रूप में पेंटिकुस्तवादियों से भिन्न है। पेंटिकुस्तवादी सदैव अपनी महान शक्तियों में गर्व करते, और अपनी अद्‌भुत उपलब्धियों में आनंद करते हैं। सुधारवादी संत विनम्र भाव से अपनी निर्बलताओं का अंगीकार करते, और अपनी दुर्बलताओं में, निंदा में, आवश्यकताओं में, और सताव में आनंद मनाते हैं अर्थात मसीह के लिये दुख उठाने में, क्योंकि उन्होंने ईश्वरीय अनुग्रह पर भरोसा करना सीखा है, वे लालसा करते है कि मसीह का सामर्थ उन पर ठहरे, और वे सुसमाचार में परमेश्वर के द्वारा कहे इस कथन को सुनते हैं– '' मेरा सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होता है'' (2 कुरिन्थियों 12:9–10)।

वह स्वयं अपनी महिमा नहीं करता, क्योंकि ऐसा करना उसके लिये घृणित है– ईशनिंदा है। पाप से टूटे उसके धर्मी ठहराये गये हृदय के तल से यह अंगीकार आता है : ''ऐसा कभी न हो कि मैं किसी अन्य बात पर गर्व करूं सिवाय प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के'' (गलातियों 6:14)।

और यह कबूतर (पवित्र आत्मा) की आहट है!

हिन्दी अनुवाद – समीर सालवे